नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 114
दि. 26.01.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

युवा शक्ति, संविधान और सांस्कृतिक चेतना से सशक्त भारत की ओर अग्रसर देश : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

(जीएनएस)। नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए भारत की लोकतांत्रिक यात्रा, सांस्कृतिक विरासत और भविष्य की दिशा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गणतंत्र दिवस केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं है, बल्कि यह ऐसा अवसर है जब पूरा देश अपने अतीत की विरासत, वर्तमान की उपलब्धियों और भविष्य के संकल्पों पर आत्ममंथन करता है। राष्ट्रपति ने कहा कि 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत ने अपनी राष्ट्रीय नियति का स्वयं निर्माण शुरू किया और 26 जनवरी 1950 को संविधान के लागू होने के साथ देश ने एक संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में नई पहचान प्राप्त की।

अपने संबोधन में राष्ट्रपति मुर्मू ने संविधान को भारत के लोकतंत्र की आधारशिला बताते हुए कहा कि यही वह ग्रंथ है जिसने विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र को मजबूती, स्थिरता और दिशा दी है। उन्होंने न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता के मूल्यों को भारतीय गणराज्य की आत्मा करार देते हुए कहा कि इन्हीं आदर्शों के कारण देश विविधताओं के बावजूद एकजुट बना हुआ है। उन्होंने संविधान निर्माताओं के त्याग और दूरदृष्टि को स्मरण करते हुए कहा कि आज का भारत उन्हीं मूल्यों की नींव पर निरंतर प्रगति कर रहा है और प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि वह संविधान की भावना को अपने जीवन में आत्मसात करे।

राष्ट्रपति ने भारत की सांस्कृतिक एकता पर विशेष जोर देते हुए कहा कि उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक फैली विविध परंपराएं और भाषाएं हमारी शक्ति हैं। उन्होंने कहा कि यह सांस्कृतिक एकता हमारे पूर्वजों की अमूल्य धरोहर है, जिसने सदियों से देश को एक सूत्र में बांधे रखा है। सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती जैसे राष्ट्रीय आयोजनों का उल्लेख करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि ऐसे स्मरणोत्सव देश में एकता, अखंडता और राष्ट्रभाव को और अधिक मजबूत करते हैं तथा नई पीढ़ी को इतिहास से जोड़ते हैं।

अपने संबोधन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' की रचना के 150 वर्ष पूरे होने का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत केवल एक रचना नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति समर्पण और श्रद्धा का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि किस प्रकार सुब्रमण्य भारती, श्री अरबिंदो और अन्य महान विचारकों ने इस गीत को विभिन्न भाषाओं और माध्यमों से जन-जन तक पहुंचाया, जिससे 'वंदे मातरम्' पूरे देश की भावनाओं का स्वर बन गया।

राष्ट्रपति ने 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाए जाने का उल्लेख करते हुए कहा कि नेताजी का दिया गया 'जय हिंद' का नारा आज भी देश के युवाओं में साहस, आत्मविश्वास और राष्ट्रगौरव का संचार करता है। उन्होंने कहा कि आज का युवा भारत देश के बहुआयामी विकास को दिशा दे रहा है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नवाचार, स्टार्टअप, खेल और सामाजिक परिवर्तन जैसे क्षेत्रों में युवाओं की सक्रिय भूमिका भारत को एक विकसित राष्ट्र के लक्ष्य की ओर तेजी से अग्रसर कर रही है।

महिला सशक्तिकरण पर बोलते हुए राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि देश की प्रगति में महिलाओं की भूमिका लगातार सशक्त हो रही है। उन्होंने बताया कि आज दस करोड़ से अधिक महिलाएं स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल कर रही हैं, बल्कि सामाजिक बदलाव की भी अगुवाई कर रही हैं। उन्होंने खेल जगत में भारतीय बेटियों की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि क्रिकेट, शतरंज और अन्य खेलों में महिलाओं ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश का मान बढ़ाया है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनी हैं।

अपने संबोधन के अंत में राष्ट्रपति ने देशवासियों से आह्वान किया कि वे राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सद्भाव और संवैधानिक मूल्यों को और मजबूत करने के लिए मिलकर कार्य करें। उन्होंने कहा कि भारत की असली ताकत उसके नागरिकों की एकजुटता, लोकतांत्रिक परंपराओं और साझा प्रयासों में निहित है। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति का यह संदेश आत्मविश्वासी, समरस और उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ते भारत की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करता है।

हिंद महासागर में भारत की समुद्री कूटनीति को नई धार, IPOI में स्पेन की एंट्री से वैश्विक संतुलन पर मजबूत हुई दिल्ली की पकड़

(जीएनएस)। नई दिल्ली। हिंद महासागर और व्यापक इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की बढ़ती रणनीतिक मौजूदगी को एक और अहम अंतरराष्ट्रीय समर्थन मिल गया है। यूरोप की प्रमुख समुद्री शक्ति स्पेन का औपचारिक रूप से इंडो-पैसिफिक ओशन्स इनिशिएटिव (IPOI) में शामिल होना केवल एक कूटनीतिक औपचारिकता नहीं, बल्कि भारत की उस दीर्घकालिक समुद्री सोच की पुष्टि है, जो उसे क्षेत्र की स्थिरता, सुरक्षा और सहयोग का केंद्रीय स्तंभ बनाती जा रही है। स्पेन के विदेश मंत्री जोस मैनुअल अल्बेरेस द्वारा विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर को Declaration of Accession सौंपा जाना इस बात का संकेत है कि अब भारत की समुद्री पहलें सिर्फ क्षेत्रीय नहीं, बल्कि वैश्विक भरोसे का केंद्र बन रही हैं।

भारत सरकार ने स्पेन के इस कदम का खुले दिल से स्वागत करते हुए इसे भारत-स्पेन संबंधों में एक निर्णायक मोड़ बताया है। विदेश मंत्रालय के अनुसार, IPOI में स्पेन की भागीदारी से दोनों देशों के बीच सहयोग केवल व्यापार और कूटनीति तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह समुद्री सुरक्षा, रणनीतिक समन्वय और वैश्विक स्थिरता जैसे अहम क्षेत्रों में भी नई ऊंचाइयों को छुएगा। भारत लंबे समय से एक स्वतंत्र, खुले और नियम-आधारित इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की वकालत करता रहा है और स्पेन जैसे यूरोपीय देश का इस पहल से जुड़ना उसी सोच को मजबूती देता है।

इंडो-पैसिफिक ओशन्स इनिशिएटिव की शुरुआत भारत ने इस उद्देश्य से की थी कि समुद्री क्षेत्रों को टकराव का मैदान नहीं, बल्कि सहयोग का सेतु बनाया जाए। IPOI के तहत समुद्री सुरक्षा, व्यापार और कनेक्टिविटी, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण, आपदा राहत और मानवीय सहायता, समुद्री संसाधनों का सतत उपयोग और क्षमता निर्माण जैसे प्रमुख आयाम शामिल हैं। यह पहल किसी सैन्य गठबंधन की तरह नहीं, बल्कि साझा जिम्मेदारी और सहयोग पर आधारित ढांचा है, जो इसे कई अन्य वैश्विक पहलों से अलग बनाता है।

स्पेन का जुड़ना इस लिहाज से भी अहम है कि वह अटलांटिक क्षेत्र में एक अनुभवी और तकनीकी रूप से सक्षम समुद्री शक्ति है। उसकी नौसेना को समुद्री निगरानी, समुद्री डकैती से निपटने और अंतरराष्ट्रीय अभियानों का लंबा अनुभव है। अब यही अनुभव हिंद महासागर और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में साझा होगा, जिससे इस पूरे इलाके की समुद्री सुरक्षा संरचना और मजबूत हो सकती है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह सहयोग अहम समुद्री मार्गों, चोक पॉइंट्स और व्यापारिक लाइनों की सुरक्षा में भारत की भूमिका को और सुदृढ़ करेगा।

हिंद महासागर क्षेत्र में भारत को पहले ही कई देश Preferred Security Partner के रूप में देखते हैं। भारतीय नौसेना ने बीते वर्षों में न सिर्फ समुद्री गश्त और सुरक्षा अभियानों में, बल्कि आपदा राहत और मानवीय सहायता में भी अपनी विश्वसनीयता साबित की है। चाहे सुनामी राहत अभियान हो, कोविड काल में 'मिशन सागर' हो या हालिया प्राकृतिक आपदाओं के दौरान त्वरित सहायता, भारत ने खुद को एक जिम्मेदार समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित किया है। IPOI में अब तक 25 से अधिक देशों का जुड़ना इस बात का प्रमाण है कि वैश्विक समुदाय भारत की इस भूमिका को गंभीरता से स्वीकार कर रहा है।

स्पेन की भागीदारी से ट्रेनिंग, संयुक्त अभ्यास, समुद्री निगरानी, रक्षा तकनीक और सूचना साझा करने जैसे क्षेत्रों में भी नए अवसर खुलेंगे। इससे न केवल समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ने और तस्करी जैसी चुनौतियों से निपटना आसान होगा, बल्कि प्राकृतिक आपदाओं के समय त्वरित और समन्वित प्रतिक्रिया की क्षमता भी बढ़ेगी। भारत के लिए यह सहयोग इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हिंद महासागर वैश्विक व्यापार का बड़ा हिस्सा वहन करता है और इसकी स्थिरता सीधे विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ी है।

रणनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, स्पेन का IPOI में शामिल होना यह दर्शाता है कि इंडो-पैसिफिक अब केवल एशिया-प्रशांत का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यूरोप भी इसे वैश्विक स्थिरता के केंद्र के रूप में देखने लगा है। यह भारत की उस कूटनीतिक सफलता का परिणाम है, जिसमें उसने बिना किसी दबाव या सैन्य आक्रामकता के, संवाद, सहयोग और भरोसे के जरिए अपनी जगह बनाई है।

कुल मिलाकर, IPOI में स्पेन की एंट्री भारत के लिए एक रणनीतिक जीत मानी जा रही है। यह कदम न केवल भारत-स्पेन द्विपक्षीय संबंधों को नई गहराई देगा, बल्कि हिंद महासागर और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत को एक निर्णायक, संतुलित और भरोसेमंद समुद्री शक्ति के रूप में और मजबूत करेगा।

हैदराबाद अग्निकांड: फर्नीचर दुकान के बेसमेंट में फंसे पांच लोग जिंदा जले, 22 घंटे बाद मिले शव

(जीएनएस)। हैदराबाद के नामपल्ली इलाके में शनिवार दोपहर एक चार मंजिला फर्नीचर दुकान में भीषण आग लग गई, जिसमें पांच लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। मृतकों में दो बच्चे शामिल हैं। आग लगने के लगभग 22 घंटे बाद रविवार सुबह पुलिस और राहत टीमों ने इमारत के बेसमेंट से शव बरामद किए।

जानकारी के अनुसार, आग दुकान के बेसमेंट में लगी, जहां लकड़ी, रेक्सिन और अन्य ज्वलनशील सामग्री भरी हुई थी। ये सामग्री आग को तेजी से फैलाने का कारण बनी। अचानक आग भड़कते ही पूरी इमारत जलती हुई दिखाई दी और कर्मचारियों और वहां रह रहे लोगों के लिए बाहर निकलना मुश्किल हो गया। घटना की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड, पुलिस और आपदा राहत टीम मौके पर पहुंचे। करीब छह घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया, लेकिन इमारत में घना धुआं होने के कारण अंदर प्रवेश करना असंभव हो गया। टीमों को घंटों तक धुआं छंटने का इंतजार करना पड़ा।

सुरक्षा परिस्थितियों में सुधार होने के बाद रविवार सुबह रेस्क्यू टीम बेसमेंट में दाखिल हुई। वहां से पांचों शव बरामद किए गए। मृतकों की पहचान बेबी (45), अखिल (11), पणीत (8), इम्तियाज (28) और हबीब (32) के रूप में हुई। हबीब फर्नीचर दुकान के मालिक के ड्राइवर बताए जा रहे हैं। शवों को पोस्टमार्टम के लिए उस्मानिया अस्पताल के मुर्दाघर भेजा गया। मृतकों के परिजन हादसे से सदमे में हैं और इलाके में शोक की लहर फैल गई है।

फायर डायरेक्टर जनरल विक्रम सिंह मान ने बताया कि बेसमेंट में फर्नीचर के अलावा रेक्सिन और कुछ केमिकल भी अवैध रूप से रखे गए थे। नियमों का उल्लंघन करते हुए बिल्डिंग मालिक ने वहां चौकीदार के परिवार की महिलाएं और बच्चे ठहराए हुए थे। उन्होंने चेतावनी दी कि इस गंभीर लापरवाही के लिए बिल्डिंग मालिक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस मामले की जांच कर रही है और आग लगने के कारणों का पता लगाने के लिए फोरेंसिक टीम भी मौके पर मौजूद है। प्रारंभिक जांच में यह संकेत मिल रहा है कि आग किसी शॉर्ट सर्किट या बेसमेंट में रखी ज्वलनशील सामग्री के कारण भड़क सकती है।

हैदराबाद अग्निकांड ने एक बार फिर सुरक्षा मानकों और नियमों का पालन करने की आवश्यकता पर ध्यान खींचा है। विशेषज्ञों का कहना है कि अवैध रूप से ज्वलनशील सामग्री रखना और बच्चों या परिवारों को असुरक्षित स्थानों पर ठहराना गंभीर अपराध है। ऐसे हादसे रोकने के लिए नियमित निरीक्षण और कड़ाई से नियमों का पालन सुनिश्चित करना जरूरी है।

इस घटना ने शहरवासियों में सुरक्षा जागरूकता बढ़ा दी है। स्थानीय प्रशासन ने भी चेतावनी जारी की है कि सभी व्यावसायिक इमारतों में फायर सेफ्टी उपकरणों की नियमित जांच हो और कोई भी नियम उल्लंघन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

फिलहाल मृतकों के परिजन और स्थानीय समुदाय हादसे के सदमे से उबरने की कोशिश कर रहे हैं। प्रशासन ने मृतकों के परिवार को मुआवजा देने की भी घोषणा की है।

भारत को दुनिया की नज़रों से दिखाने वाली आवाज़ खामोश, पत्रकारिता के युग का अंत

(जीएनएस)। नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय पत्रकारिता के एक पूरे दौर का आज अंत हो गया। भारत को समझने, उसकी जटिलताओं को दुनिया के सामने रखने और सत्ता से सवाल पूछने वाली निर्भीक आवाज़ मार्क टली अब हमारे बीच नहीं रहे। 90 वर्ष की उम्र में दिल्ली में उनका निधन हो गया। लंबे समय से अस्वस्थ चल रहे मार्क टली पिछले करीब एक सप्ताह से साकेत स्थित मैक्स अस्पताल में भर्ती थे। उनके जाने से न केवल भारतीय पत्रकारिता, बल्कि वैश्विक मीडिया जगत में एक ऐसी खाली जगह बन गई है, जिसे भर पाना आसान नहीं होगा। मार्क टली उन पत्रकारों में थे, जिनके लिए भारत केवल एक पोस्टिंग नहीं, बल्कि जीवन का अभिन्न हिस्सा था। 24 अक्टूबर 1935 को कोलकाता में जन्मे टली का बचपन औपनिवेशिक भारत में बीता। यही कारण था कि भारत की संस्कृति, राजनीति और समाज को वे बाहरी नज़र से नहीं, बल्कि भीतर से समझते थे। बीबीसी के साथ उनका रिश्ता लगभग ढाई दशक तक चला, जिसमें वे 22 वर्षों तक नई दिल्ली ब्यूरो के प्रमुख रहे। इस दौरान उन्होंने भारत की कहानी को पश्चिमी दुनिया तक उसी रूप में पहुंचाया, जैसी वह वास्तव में थी—जटिल, जीवंत, विरोधाभासों से भरी और लगातार बदलती हुई।

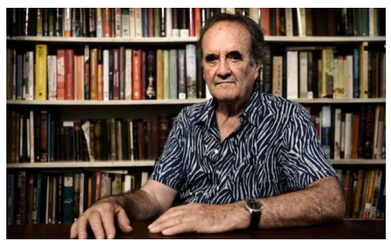

उनकी पत्रकारिता की सबसे बड़ी ताकत निष्पक्षता और साहस था। वे सत्ता के करीब रहने के बजाय सत्ता से सवाल करने में विश्वास रखते थे। 1975 से 1977 के बीच लगे आपातकाल के दौरान उनकी रिपोर्टिंग ने भारतीय लोकतंत्र पर मंडरा रहे खतरे को अंतरराष्ट्रीय मंच पर उजागर किया। इसी बेबाकी की कीमत उन्हें चुकानी पड़ी और तत्कालीन सरकार के दबाव में उन्हें भारत छोड़ना पड़ा। हालांकि, यह दूरी केवल भौगोलिक थी। भारत के प्रति उनका जुड़ाव कभी कम नहीं हुआ और आपातकाल समाप्त होने के बाद वे फिर लौटे, पहले से कहीं अधिक गहराई और संवेदनशीलता के साथ।

मार्क टली भारत के उन ऐतिहासिक क्षणों के साक्षी थे, जिन्होंने देश की दिशा और दशा बदल दी। 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध और बांग्लादेश मुक्ति संग्राम, 1984 में स्वर्ण मंदिर में हुआ सैन्य अभियान, इंदिरा गांधी की हत्या, उसके बाद भड़के सिख विरोधी दंगे और भोपाल गैस त्रासदी—इन सभी घटनाओं को उन्होंने केवल खबर के रूप में नहीं देखा, बल्कि मानवीय त्रासदी और सामाजिक प्रभाव के संदर्भ में दुनिया के सामने रखा। उनकी रिपोर्टिंग में सनसनी नहीं, बल्कि संदर्भ और संवेदना होती थी, जो आज के दौर में दुर्लभ होती जा रही है। पत्रकारिता के साथ-साथ मार्क टली एक गहरे विचारक और लेखक भी थे। उनकी किताबें भारत को समझने की कोशिश का विस्तार हैं। 'नो फुल स्टॉप्स इन इंडिया' में उन्होंने दिखाया कि यह देश कभी पूर्ण विराम पर नहीं रुकता, बल्कि निरंतर बहता रहता है। 'इंडिया इन स्लो मोशन' और 'द हार्ट ऑफ इंडिया' जैसी किताबों में उन्होंने ग्रामीण भारत, सामाजिक बदलाव और परंपरा व आधुनिकता के टकराव को बारीकी से उकेरा। इन रचनाओं ने पश्चिमी पाठकों को भारत की उस सच्चाई से रूबरू कराया, जो अक्सर सुर्खियों से परे रह जाती है।

रेडियो की दुनिया में भी उनकी अलग पहचान थी। बीबीसी रेडियो-4 के लोकप्रिय कार्यक्रम 'समथिंग अंडरस्टूड' के वे लंबे समय तक प्रस्तोता रहे। उनकी आवाज़, शैली और विषयों की गहराई ने श्रोताओं को सोचने पर मजबूर किया। वे कठिन मुद्दों को भी सहज भाषा में रखने की कला जानते थे, यही कारण था कि उनकी बात आम लोगों से लेकर नीति-निर्माताओं तक असर छोड़ती थी।

मार्क टली को उनके योगदान के लिए अंतरराष्ट्रीय और भारतीय स्तर पर कई सम्मान मिले। 2002 में ब्रिटेन ने उन्हें 'नाइटहुड' से नवाजा, वहीं भारत सरकार ने 2005 में पद्म भूषण देकर उनके भारत प्रेम और पत्रकारिता के योगदान को सम्मानित किया। यह सम्मान केवल औपचारिक नहीं थे, बल्कि उस भरोसे और सम्मान का प्रतीक थे, जो उन्होंने दोनों देशों में अर्जित किया था।

उनका जाना ऐसे समय में हुआ है, जब पत्रकारिता तेजी से बदल रही है और निष्पक्षता, धैर्य व गहराई जैसे मूल्य चुनौती के दौर से गुजर रहे हैं। मार्क टली का जीवन और काम आने वाली पीढ़ियों के पत्रकारों के लिए एक मानक की तरह रहेगा—कि सत्ता से दूरी बनाकर, सच के करीब कैसे रहा जाए; कि किसी देश को समझने के लिए वहां की आत्मा तक कैसे पहुंचा जाए।

दूध से आत्मनिर्भरता तक : बुन्देलखंड में महिलाओं ने बदली विकास की तस्वीर

(जीएनएस)। लखनऊ। बुन्देलखंड, जिसे कभी सूखा, गरीबी और पलायन का पर्याय माना जाता था, आज महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता की नई मिसाल बनता जा रहा है। इस बदलाव की सबसे मजबूत कड़ी बना है डेयरी व्यवसाय, जिसने गांव-गांव की महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त कर क्षेत्र की पहचान ही बदल दी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दूरदर्शी नेतृत्व में लागू की गई डेयरी वैल्यू चेन आधारित योजनाओं ने बुन्देलखंड की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई जान फूंकी है और महिलाओं को सम्मानजनक आजीविका का स्थायी माध्यम दिया है। बुन्देलखंड के सात जिलों चित्रकूट, झांसी, बांदा, हमीरपुर, जालौन, महोबा और ललितपुर में डेयरी व्यवसाय अब केवल दूध उत्पादन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का आधार बन चुका है। आज इस क्षेत्र की 86 हजार से अधिक महिलाएं डेयरी से नियमित आय अर्जित कर रही हैं। ये महिलाएं न केवल अपने परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा कर रही हैं, बल्कि गांव की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती दे रही हैं। संगठित दुग्ध संग्रह, वैज्ञानिक पशुपालन और सुनिश्चित बाजार व्यवस्था ने उनके परिश्रम को सही मूल्य दिलाना शुरू कर दिया है।

इस बदलाव के केंद्र में महिला दुग्ध उत्पादकों द्वारा संचालित 'बालिनी मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी' है, जिसने महिलाओं को बिचौलियों पर निर्भरता से मुक्त कर दिया है। पहले जहां दूध बेचने में महिलाओं को कम दाम मिलते थे और भुगतान में भी अनिश्चितता रहती थी, वहीं अब बालिनी मॉडल के जरिए दूध और दुग्ध उत्पाद सीधे बाजार तक पहुंच रहे हैं। इससे महिलाओं को पारदर्शी व्यवस्था में उचित मूल्य मिल रहा है और उनकी आय में स्थायित्व आया है।

सूचना

हमारे सभी पाठकों एवं शुभचिंतकों को सूचित किया जाता है कि 26 जनवरी 2026 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर हमारा कार्यालय बंद रहेगा। अतः 27 जनवरी 2026 का अंक प्रकाशित नहीं किया जाएगा।, आगामी अंक 28 जनवरी, 2026 बुधवार से यथाावत अंक प्रकाशित होंगे।

-सम्पादक

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

शुक्र मनाओ कि हमारे पास तेल नहीं है

शिकायत करना इंसान की फितरत में है। जो हमारे पास नहीं है, वही हमें सबसे ज्यादा खलता है। पड़ोसी के घर नई कार आ जाए तो अपना स्कूटर बोझ लगने लगता है, भाई के बच्चे अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ने लगें तो अपना सरकारी स्कूल पिछड़ा दिखने लगता है, और जब बात देश की आती है तो शिकायतें और भी विराट हो जाती हैं। अक्सर कहा जाता है कि फलां देश के पास तेल है, हमारे पास क्यों नहीं है। खाड़ी देशों की समृद्धि देख कर लगता है कि ऊपर वाले ने हमारे साथ नाइंसाफी कर दी। हमें महंगा पेट्रोल-डीजल खरीदना पड़ता है, जबकि वे देश तेल में नहा रहे हैं। लेकिन जरा ठहरिए, इस शिकायत के उलट अगर हम ज़रा ठंडे दिमाग से सोचें तो शायद हमें शिकायत नहीं, बल्कि शुक्र मनाना चाहिए कि हमारे यहां तेल के विशाल भंडार नहीं हैं। तेल केवल ऊर्जा का स्रोत नहीं है, यह आधुनिक दुनिया की राजनीति का सबसे खतरनाक हथियार भी है। जहां-जहां तेल है, वहां-वहां किसी न किसी रूप में अस्थिरता, युद्ध, तख्तापलट और बाहरी हस्तक्षेप का इतिहास भी है। इराक, लीबिया, ईरान, वेनेज़ुएला—ये सब नाम अपने आप में सबूत हैं। इन देशों की सबसे बड़ी "गलती" यही रही कि उनके पैरों के नीचे तेल का समुद्र था। तेल ने उन्हें अमीर तो बनाया, लेकिन उसी तेल ने उन्हें दुनिया की महाशक्तियों की नजरों में हमेशा के लिए संदिग्ध भी बना दिया। खासकर अमेरिका की नजरों में। अमेरिका जहां भी अपने हित देखता है, वहां उसे कोई न कोई बहाना मिल ही जाता है—कभी जनसंहार के हथियार, कभी तानाशाही, कभी मानवाधिकार, कभी ड्रग तस्करी, कभी परमाणु कार्यक्रम। इराक का उदाहरण हमारे सामने है। सद्दाम हुसैन पर जनसंहार के हथियार रखने का आरोप लगाया गया। पूरी दुनिया को डराया गया कि अगर अभी कुछ नहीं किया गया तो सद्दाम दुनिया को तबाह कर देगा। हमला हुआ, सरकार गिरा दी गई, देश को तबाह कर दिया गया, लाखों लोग मारे गए। बाद में क्या निकला? जनसंहार के हथियार थे ही नहीं। लेकिन तब तक इराक बर्बाद हो चुका था। लीबिया में गद्दाफी को तानाशाह बताया गया, लोकतंत्र के नाम पर हमला किया गया, और आज वही लीबिया अलग-अलग गुटों में बंटा हुआ एक अराजक देश बन चुका है। वेनेज़ुएला में मादुरो पर ड्रग तस्करी के आरोप लगाए गए, आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए, सरकार गिराने की कोशिशें की गईं, सिर्फ इसलिए कि वहां तेल है और सरकार अमेरिकी हितों के मुताबिक नहीं चल रही।

अब ज़रा सोचिए, अगर हमारे देश के पास भी खाड़ी देशों जैसा तेल भंडार होता, तो क्या होता? क्या हम चैन से रह पाते? क्या हमारी राजनीति, हमारी नीतियां, हमारे शासक सच में स्वतंत्र रह पाते? शायद नहीं। तब हमारे यहां भी रोज कोई न कोई आरोप लगता। कभी कहा जाता कि हमारे यहां लोकतंत्र खतरे में है, कभी कहा जाता कि यहां मानवाधिकारों का हनन हो रहा है, कभी यह कहा जाता कि हम गलत देशों से दोस्ती कर रहे हैं। और अगर बात नहीं बनती, तो सीधे धमकी—या तो सुधर जाओ, या हम आ रहे हैं।

आज अमेरिका हमें भी धमकाता है, लेकिन उसकी धमकियां ट्रेड, टैरिफ और प्रतिबंधों तक सीमित रहती हैं। वह कहता है कि यह सामान मत खरीदो, वह सामान हमसे खरीदो, यह नीति बदलो, वह नीति बदलो। ये दबाव भी कम नहीं हैं, लेकिन सोचिए, अगर तेल होता तो दबाव की भाषा कितनी अलग होती। तब शायद बातें युद्धपोतों की होतीं, मिसाइलों की होतीं, और "लोकतंत्र बचाने" के नाम पर बम गिराने की होतीं। बंगलादेश युद्ध के समय अमेरिका ने अपना सातवां बेड़ा भेज दिया था, सिर्फ दबाव बनाने के लिए। अगर हमारे पास तेल होता, तो शायद एक नहीं, कई बेड़े हमारी तरफ बढ़ते। यह भी सच है कि आज की दुनिया में सीआईए या किसी भी खुफिया एजेंसी के लिए घुसपैठ करने के लिए तेल का होना जरूरी नहीं है। सिर्फ एक संप्रभु देश होना ही काफी है। लेकिन तेल होने से यह दिलचस्पी कई गुना बढ़ जाती है। तेल वाले देशों में सत्ता परिवर्तन, तख्तापलट और गृहयुद्ध कोई असामान्य बात नहीं रह गई है। वहां सरकारें अपने लोगों से ज्यादा बाहर की ताकतों को ध्यान में रखकर फैसले लेने को मजबूर हो जाती हैं। विकास का पैसा हथियारों और सुरक्षा पर खर्च होने लगता है। जनता के हिस्से में गरीबी, बेरोजगारी और अस्थिरता आती है।

हम अक्सर सोचते हैं कि तेल होता तो हम भी अमीर होते। शायद कुछ लोग अमीर होते, कुछ शहर चमकते, लेकिन पूरे देश का क्या? क्या हम सच में एक शांत, स्थिर और आत्मनिर्भर देश रह पाते? या फिर हम भी इराक और लीबिया की तरह किसी प्रयोगशाला में बदल दिए जाते, जहां बड़ी ताकतें अपने हथियार और नीतियां आजमातीं? यह सवाल पूछना जरूरी है।

शुक्र मनाने की एक और वजह यह भी है कि तेल न होने की मजबूरी ने हमें विकल्पों के बारे में सोचने पर मजबूर किया। हमने सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा जैसे रास्तों पर कदम बढ़ाए। हमने तकनीक, सेवा क्षेत्र, विज्ञान और अंतरिक्ष में अपनी पहचान बनाई। अगर हमारे पास तेल होता, तो शायद हम भी उसी पर निर्भर रह जाते और बाकी क्षेत्रों में इतनी मेहनत नहीं करते। तेल कई देशों के लिए वरदान कम और आलस का कारण ज्यादा बना है।

सख्त कानून और तकनीकी उपायों से हो समाधान

> नकली दवाओं का निर्माण और वितरण समाज के लिए गंभीर खतरा है, जिसे कड़े कानून और तकनीकी उपायों से रोका जा सकता है। क्यूआर कोड की अनिवार्यता, डिजिटल लेजर में एंट्री, नेशनल ड्रग डेटाबेस के अलावा उन्नत टेस्टिंग उपकरणों से बेहतर निगरानी व पारदर्शिता यकीनी बनेगी।

मानव जीवन की रक्षा में औषधियों की भूमिका किसी संजीवनी से कम नहीं है, परंतु जब मुनाफे की अंधी दौड़ में ये औषधियां ही जहर बन जाएं, तो समाज की नींव हिलने लगती है। जब बाजार में जीवन रक्षक दवाओं के नाम पर 'चॉक पाउडर' या 'दूषित रसायनों' का मिश्रण पहुंचता है, तो इसे केवल व्यापारिक धोखाधड़ी या बौद्धिक संपदा की चोरी मान लेना एक बड़ी भूल होगी। वास्तव में, नकली दवाओं का निर्माण और वितरण सीधे तौर पर 'हत्या का प्रयास' है, जो किसी व्यक्ति को उपचार से वंचित कर उसे मौत के मुंह में धकेल देता है।

भारत, जिसे अपनी गुणवत्ता और सामर्थ्य के कारण दुनिया की 'फार्मेसी' कहा जाता है, उसके लिए यह संकट दोहरा है। यह हमारी अंतरराष्ट्रीय साख को भी धूमिल करता है। समय की मांग है कि कानून की शक्ति और तकनीक की पारदर्शिता आपस में हाथ मिलाकर एक ऐसा अभेद्य तंत्र विकसित करें, जहां अपराधी के लिए कोई छिद्र शेष न रहे।

भारत में दवाओं के नियमन का ढांचा औषधि और प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 के साथ शुरू हुआ था, जो अपने समय के अनुसार एक ठोस दस्तावेज था। हालांकि, जैसे-जैसे समय बदला, अपराधियों के सिंडिकेट ने कानून की कमियों को पहचान लिया। साल 2008 में सरकार को यह आभास हुआ कि पुराने कानून में निहित मामूली जुर्माने और सजा इन बड़े गिरोहों के लिए कोई डर पैदा नहीं करते। इसी कारण अधिनियम में व्यापक संशोधन किए गए ताकि कानून के दांतों को पैना किया जा सके।

वर्तमान में, धारा 27(ए) के अंतर्गत कड़े प्रावधान किए गए हैं। यदि किसी नकली दवा के सेवन से व्यक्ति की मृत्यु होती है या उसे गंभीर शारीरिक क्षति पहुंचती है, तो दोषी को कम से कम 10 साल की कड़ी सजा का प्रावधान है, जिसे अपराध की गंभीरता के आधार पर आजीवन कारावास तक बढ़ाया जा सकता है। इसके साथ ही, 10 लाख रुपये या दवा की कुल कीमत का तीन गुना तक का भारी जुर्माना लगाया जाता है।

न्यायपालिका ने भी इस मुद्दे पर सख्त रुख अपनाया है। 'यूनियन ऑफ इंडिया बनाम अशोक कुमार शर्मा' (2020) जैसे ऐतिहासिक मामलों में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि जन स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने वाले अपराधियों को किसी भी प्रकार की न्यायिक रियायत या नरमी नहीं मिलनी चाहिए। अदालतों ने ड्रग इंस्पेक्टर्स की शक्तियों को स्पष्ट करते हुए उन्हें जांच, नमूना संग्रह और जब्ती की प्रक्रिया में अधिक स्वायत्तता प्रदान की है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि तकनीकी खामियों के कारण कोई अपराधी कानून की पकड़ से बाहर न निकल सके। कानून का यह प्रहार तब और प्रभावी हो जाता है जब इसे डिजिटल नवाचारों का समर्थन मिलता है। आज का दौर डेटा और पारदर्शिता का है, जहां 'ट्रैक एंड ट्रेस' तकनीक इस पूरी व्यवस्था की रीढ़ बन चुकी है। कागजी दस्तावेजों के हेरफेर के दिन अब लद चुके हैं और सरकार द्वारा शीर्ष 300 ब्रांडों पर क्यूआर कोड अनिवार्य करना इस दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।

तकनीकी मोर्चे पर सबसे शक्तिशाली समाधान 'ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी' में निहित है। यदि दवा के कच्चे माल यानी 'एक्टिव फार्मास्युटिकल इंग्रेडिएंट' की खरीद से लेकर कारखाने में उसके निर्माण, फिर डिस्ट्रीब्यूटर के गोदाम और अंततः मरीज के हाथ तक पहुंचने की हर कड़ी को एक सुरक्षित 'डिजिटल लेजर' में दर्ज करें, तो हेरफेर की संभावना शून्य हो जाती है। ब्लॉकचेन की खूबी यह है कि इसमें एक बार दर्ज जानकारी को कोई भी माफिया बदल या मिटा नहीं सकता। इसके साथ ही, एक 'सेंट्रलाइज्ड नेशनल ड्रग डेटाबेस' की स्थापना अनिवार्य है। अक्सर देखा गया है कि एक राज्य में प्रतिबंधित दवा दूसरे राज्य में बेची जाती रहती है। एक एकीकृत डेटाबेस होने से किसी भी कोने में पकड़ी गई नकली दवा की जानकारी रियल-टाइम में देशभर के ड्रग इंस्पेक्टर्स को मिल सकेगी, जिससे अपराधियों के भागने के रास्ते बंद हो जाएंगे।

ड्रग विभाग की भूमिका को भी अब पारंपरिक 'इंस्पेक्टर राज' से ऊपर उठकर 'प्रौद्योगिकी मित्र' के रूप में विकसित होना होगा। अब अधिकारियों को केवल छापेमारी तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन्हें 'डेटा एनालिटिक्स' का विशेषज्ञ बनना होगा। यदि किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में किसी ब्रांड की दवा की खपत अचानक और अस्वाभाविक रूप से बढ़ जाती है, तो सिस्टम को स्वतः ही 'रेड फ्लैग' या चेतावनी जारी करनी चाहिए। इसके साथ ही, ड्रग इंस्पेक्टरों को अत्याधुनिक 'हैंडहेल्ड रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी' जैसे टेस्टिंग उपकरणों से लैस किया जाना चाहिए। ये उपकरण मौके पर ही, बिना पैकिंग खोले, दवा की शुद्धता की प्राथमिक जांच कर सकते हैं, जिससे लैब रिपोर्ट के लिए महीनों तक होने वाले इंतजार को खत्म किया जा सकता है।

नकली दवाओं के जाल को काटने के लिए हर नागरिक को यह समझना चाहिए कि पक्का बिल मात्र एक रसीद नहीं, बल्कि उसका सबसे बड़ा सुरक्षा कवच है, जो कानूनी लड़ाई और मुआवजे के लिए प्राथमिक सबूत बनता है। दवा खरीदते समय पैकेजिंग की बारीकियों जैसे धुंधली छपाई, गलत स्पेलिंग या टूटी सील पर पैनी नजर रखें। भारी छूट के लालच में न आएं। सतर्कता ही आपके स्वास्थ्य और कानूनी अधिकारों की रक्षा का एकमात्र मार्ग है।

'टॉर्ट लॉ' और उपभोक्ता कानूनों के तहत, नकली दवा से होने वाले शारीरिक और मानसिक नुकसान के लिए निर्माता और विक्रेता दोनों को जवाबदेह ठहराया जा सकता है। यह पीड़ित परिवारों को न केवल आर्थिक संबल देता है, बल्कि कंपनियों को अपनी सप्लाई चेन के प्रति अधिक सतर्क रहने के लिए मजबूर भी करता है।

प्रेरणा

जब भारत ने बदली अपनी पहचानः मिट्टी से निकले अशोक स्तंभ से लेकर गणराज्य बनने तक की पूरी कहानी

26 जनवरी 1950 की तारीख भारत के इतिहास में केवल एक संवैधानिक पड़ाव नहीं थी, बल्कि यह उस दिन का प्रतीक थी जब भारत ने खुद को मानसिक, सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक रूप से भी आज़ाद घोषित किया। 15 अगस्त 1947 को अंग्रेज चले गए थे, लेकिन देश की आत्मा पर उनके शासन की छाया अब भी मौजूद थी। सरकारी दफ्तरों की मुहरों पर ब्रिटिश क्राउन चमकता था, सेना और प्रशासन के नामों में 'रॉयल' और 'इंपीरियल' जुड़े हुए थे, नोटों पर विदेशी राजा की तस्वीर थी और अदालतों के दस्तावेज आज भी राजा के आदेश से जारी होते थे। आम आदमी के लिए भले ही आज़ादी आ चुकी थी, लेकिन राज्य की पहचान अब भी औपनिवेशिक ढांचे में कैद थी। आजादी के तुरंत बाद यह सवाल संविधान सभा में उठा कि क्या भारत केवल सत्ता परिवर्तन से संतुष्ट रहेगा या अपनी पहचान भी बदलेगा। यह सवाल सिर्फ प्रतीकों का नहीं था, बल्कि यह तय करने का था कि नया भारत किस विचार पर खड़ा होगा। पंडित जवाहरलाल नेहरू मानते थे कि किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसके प्रतीकों में झलकती है। अगर प्रतीक पुराने होंगे, तो सोच भी पुरानी बनी रहेगी। सरदार वल्लभभाई पटेल का विचार और भी स्पष्ट था। उनके अनुसार जब तक ब्रिटिश शासन के निशान बने रहेंगे, तब तक जनता के मन से दासता का भाव समाप्त नहीं होगा। डॉ. भीमराव अंबेडकर इस बहस को एक और स्तर पर ले गए। वे चाहते थे कि भारत के प्रतीक ऐसे हों जो धर्मनिरपेक्ष हों, तर्क और नैतिकता पर आधारित हों और किसी भी नागरिक को अलग-थलग महसूस न कराएं। यहीं से शुरू हुई उस नए भारत की तलाश, जो अपने अतीत से प्रेरणा ले, लेकिन भविष्य की ओर देखे। संविधान सभा में राष्ट्रीय प्रतीक को लेकर कई सुझाव आए। कुछ लोगों ने धार्मिक चिह्नों की बात की, किसी ने देवी-देवताओं, ओम या धर्मचक्र का प्रस्ताव रखा। कुछ नेताओं को लगा कि आधुनिक भारत को दर्शाने के लिए फैक्ट्री, बांध, मशीन या हाथ मिलाते हुए लोगों का प्रतीक होना चाहिए। ताजमहल, हल, धान की बालियां, हाथी और बरगद जैसे सुझाव भी सामने आए। लेकिन हर प्रस्ताव पर यही सवाल उठता रहा कि क्या यह प्रतीक पूरे भारत का प्रतिनिधित्व कर पाएगा। आखिरकार नजर गई अशोक स्तंभ पर। यह कोई नया या अपरिचित चिन्ह नहीं था, बल्कि भारत की प्राचीन सभ्यता की गहराइयों से निकला हुआ प्रतीक था। सम्राट अशोक का नाम केवल एक विजेता के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे शासक के रूप में जाना जाता है जिसने सत्ता को नैतिकता और करुणा से जोड़ा। उनके शिलालेखों में हिंसा या अहंकार नहीं, बल्कि धम्म, सह-अस्तित्व और न्याय का संदेश मिलता है। यही मूल्य उस नए भारत के मूल में थे, जो खुद को एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में स्थापित करना चाहता था। नेहरू, पटेल और अंबेडकर तीनों इस बात पर सहमत हुए कि अशोक स्तंभ भारत की प्राचीन संस्कृति और आधुनिक लोकतंत्र के बीच सेतु बन सकता है। यह न किसी एक धर्म का प्रतीक था और न ही किसी राजवंश की निजी पहचान। यह कानून के शासन, नैतिक शक्ति और सत्य के रास्ते पर चलने का संदेश देता था। इसी विचार के साथ 'सत्यमेव जयते' को भी राष्ट्रीय आदर्श वाक्य के रूप में अपनाया गया। यह केवल एक संस्कृत वाक्य नहीं था, बल्कि नए गणराज्य का नैतिक घोषणापत्र था। जब यह तय हो गया कि अशोक स्तंभ राष्ट्रीय प्रतीक बनेगा, तब उसकी डिजाइन को लेकर भी गंभीर प्रयास किए गए। देश के विभिन्न कला विद्यालयों और कलाकारों से डिजाइन मंगवाए गए, लेकिन कोई भी डिजाइन पूरी तरह संतोषजनक नहीं लगी। अंततः यह जिम्मेदारी शांति निकेतन के महान कलाकार नंदलाल बोस और उनकी टीम को दी गई। नंदलाल बोस ने सारनाथ स्थित मूल अशोक स्तंभ से प्रेरणा लेकर एक सरल, प्रभावशाली और गरिमामय डिजाइन तैयार की। चार शेर, जो चारों दिशाओं की ओर देखते हैं, शक्ति, साहस और सतर्कता का प्रतीक बने। नीचे बने पशु और धर्मचक्र यह दर्शाते हैं कि यह शक्ति कानून और संतुलन से बंधी हुई है। जिस अशोक स्तंभ को भारत ने अपने राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया, उसका इतिहास भी उतना ही रोचक है। यह स्तंभ सम्राट अशोक ने लगभग 280 ईसा पूर्व बनवाया था। समय के साथ यह टूट गया और मिट्टी में दबकर गुम हो गया। सदियों बाद जर्मन सिविल इंजीनियर फ्रेडरिक ओर्टेल भारत आए। उन्हें पुरातत्व में गहरी रुचि थी। उन्होंने चीनी यात्रियों ह्वेनसांग और फाहियान के यात्रा-वृत्तांतों का अध्ययन किया, जिनमें सारनाथ का उल्लेख मिलता है। इन्हीं संकेतों के आधार पर 1904–05 में खुदाई करवाई गई। खुदाई में स्तंभ का शेर वाला शीर्ष भाग लगभग पूरी तरह सुरक्षित मिला। यह खोज केवल एक पुरातात्विक घटना नहीं थी, बल्कि भारत की सांस्कृतिक स्मृति के पुनर्जागरण का क्षण थी। 26 जनवरी 1950 को जब संविधान लागू हुआ, उसी दिन भारत ने औपचारिक रूप से अपने सभी औपनिवेशिक प्रतीकों को विदा किया। सेना, नौसेना और वायुसेना के नामों से 'रॉयल' हटा दिया गया। इंपीरियल सिविल सर्विस अब इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस बन गई और इंपीरियल पुलिस की जगह इंडियन पुलिस सर्विस आई। वर्दियों से ब्रिटिश क्राउन हट गया और उसकी जगह अशोक स्तंभ ने ले ली। यह बदलाव केवल नामों का नहीं था, बल्कि यह सत्ता के स्रोत के बदलने का प्रतीक था।

अनियोजित और असुरक्षित शहरी विकास, नौकरशाही पर कामचलाऊ संस्कृति हावी

पिछले दिनों एक हृदयविदारक घटना में ग्रेटर नोएडा में एक नौजवान इंजीनियर युवराज मेहता की मौत ने सारे देश का ध्यान अपनी ओर खींचा। युवराज की जान तब गई, जब धुंध के चलते उनकी कार 90 डिग्री के टर्न पर एक बैरियर को तोड़ते बेसमेंट बनाने के लिए खोदे गए गड्ढे में जा गिरी, जिसमें पानी भरा था। उसने मदद के लिए अपने पिता को फोन किया और राह चलते लोगों से भी मदद की गुहार लगाई। थोड़ी देर बाद तमाम सरकारी अमला वहां पर पहुंचा, पर संसाधनों के अभाव और ठंडे पानी में उतरने की हिचक के चलते उसे बचाने के लिए आगे नहीं बढ़ा।

अंततः इस युवक ने पिता और खुद को बचाने आए लोगों के सामने दम तोड़ दिया। उसे बचाने का काम न तो एसडीआरएफ ने किया, न पुलिस ने और न ही अग्निशमन दल ने। इन सब विभागों की हिचक को देखकर एक डिलीवरी ब्वॉय ठंडे पानी में युवराज को बचाने उतरा, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। इस घटना को लेकर आक्रोश इसलिए अधिक है, क्योंकि जिन्हें युवक को बचाने के लिए हरसंभव प्रयास करने चाहिए थे, वे एक तरह से मूकदर्शक बने रहे। इससे खराब बात और कोई नहीं कि कई विभागों के कर्मचारी मौके पर तो पहुंच जाएं, लेकिन संकट में फंसे व्यक्ति को बचाने के लिए कुछ न करें।

युवराज मेहता की मौत ने उत्तर प्रदेश शासन को हिलाकर रख दिया है। मुख्यमंत्री ने इस घटना की जांच के आदेश दे दिए हैं। इस जांच के जो भी परिणाम हों, लेकिन जो जिंदगी चली गई, वह वापस नहीं आने वाली। इस घटना के बाद उन परिस्थितियों की ओर सबका ध्यान गया है, जिनके चलते युवराज की मौत हुई, लेकिन उनमें कोई बुनियादी सुधार आने की उम्मीद नहीं। भारत के शहर जिस तरह विकसित हो रहे हैं और वहां निर्माण कार्यों को सरकारी एवं निजी क्षेत्रों की ओर से जिस तरह अंजाम दिया जाता है, वे लगातार दुर्घटनाओं को बढ़ावा दे रहे हैं।

हमारी औसत नौकरशाही पर कामचलाऊ संस्कृति हावी है। वह नागरिक सुविधाओं और जन सुरक्षा उपायों की अनदेखी और उनके चलते होने वाली दुर्घटनाओं पर लीपापोती में माहिर हो चुकी है। इसके चलते नागरिक असुविधाएं बढ़ती रहती हैं और लोग हादसों का भी शिकार होते रहते हैं। ग्रेटर नोएडा में अनेक इलाकों में नाले खुले हैं और सीवर का पानी ओवरफ्लो होता रहता है, जबकि इसे प्रदेश के विकसित शहर के रूप में जाना जाता है। इस शहर में भी कोई यह देखने वाला नहीं कि सड़क किनारों पर पानी क्यों भरा रहता है, सीवर लाइनें क्यों उफनाती रहती हैं और सड़कें टूटी हुई क्यों पड़ी रहती हैं? ध्यान रहे ऐसे स्थलों में मच्छर भी पनपते हैं और गंदगी भी जमा होती है, जो बीमारियों का कारण बनती है।

देश के छोटे-बड़े शहरों में आबादी का दबाव लगातार बढ़ रहा है। सरकारी विभाग जमीनें अधिकृत कर बिल्डरों को देते रहते हैं। चूंकि ऐसी जमीनों के इर्दगिर्द अनधिकृत और अनियोजित कॉलोनियां विकसित होती रहती हैं, इसलिए बेतरतीब विकास भी होता रहता है। ऐसी अधिकांश कॉलोनियों में शुरू में न तो आने-जाने के रास्ते सुगम होते हैं, न स्ट्रीट लाइट होती है, न सीवेज की उचित व्यवस्था होती है और न बिजली के कनेक्शन ढंग से होते हैं। इन कॉलोनियों में तैयार भवनों और बहुमंजिला इमारतों में जब लोग रहने पहुंचते हैं तो वे तमाम समस्याओं से दो-चार होते हैं, लेकिन उनका समाधान करने के लिए न तो बिल्डर आगे आते हैं और न ही सरकारी विभाग।

चूंकि घरों और फ्लैटों की मांग अधिक है, इसलिए लोग अविकसित इलाकों में रहने को मजबूर होते हैं। ग्रेटर नोएडा में युवराज मेहता की जिस रास्ते में मौत हुई, वह कोई सुगम रास्ता नहीं था। उस पर बना 90 डिग्री का कोण उसे एक खतरनाक ब्लैक स्पॉट यानी दुर्घटना बहुल क्षेत्र बनाता था। इसे लेकर प्रशासन को शिकायत भी की गई थी, पर किसी ने कुछ नहीं किया। इस तरह की प्रशासनिक अनदेखी सारे ही शहरों में दिखती है। इस कारण लोग कभी खुले सीवरों में गिरकर या फिर असुरक्षित रास्तों में चोटिल होकर जान गंवाते रहते हैं। हर हादसा सरकारी अकर्मण्यता या अव्यवस्था के कारण होता है। एक समस्या यह भी है कि अनियोजित विकास घटिया तरीके से होता है।

इस कारण भी हादसे होते रहते हैं, लेकिन कोई उनकी सुध नहीं लेता। कभी नई बनी बिल्डिंग गिर जाती है और कभी नई बनी सड़क में गड्ढे हो जाते हैं। शहरों में यह प्रायः ही देखने में आता है कि जहां भी निर्माण हो रहा होता है, वह आमतौर पर एक जोखिम वाला क्षेत्र होता है। वहां सड़कें सही नहीं होतीं और उनके किनारे गहरे गड्ढे भी होते हैं। इसी तरह जल निकासी की कोई व्यवस्था नहीं होती। ऐसे जोखिम वाले स्थलों से लोगों को सचेत करने वाले कोई संकेतक भी नहीं होते। कई बार तो ऐसे खतरे के स्थान अंधेरे में डूबे होते हैं। कोई नहीं जानता नौकरशाही की अकर्मण्यता कब खत्म होगी और कब तक लोगों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ होता रहेगा?

एक तरफ मोदी सरकार भारत को तीन ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी और 2047 विकसित देश बनाने के लिए प्रयासरत है और दूसरी तरफ हमारे शहर चरमराते जा रहे हैं और उनमें नागरिक सुविधाओं का अभाव बढ़ने के साथ सार्वजनिक सुरक्षा के उपाय अपर्याप्त होते जा रहे हैं। शहरों में आबादी बढ़ने के साथ शहरी विकास में सुधार न होना आश्चर्यजनक है।

अभियान

महाशिवरात्रि पर शिवलिंग अभिषेक का रहस्य और जीवन परिवर्तन की साधना

महाशिवरात्रि केवल एक तिथि या परंपरागत पर्व नहीं है, बल्कि यह चेतना, साधना और सृजन के परम स्रोत भगवान शिव से जुड़ने का सबसे पवित्र अवसर है। यह वही रात्रि है जब शिव तत्व अपने पूर्ण जाग्रत स्वरूप में सृष्टि में प्रवाहित होता है और साधक को अपने भीतर छिपी संभावनाओं से साक्षात्कार का अवसर देता है। शास्त्रों में कहा गया है कि महाशिवरात्रि के दिन महादेव और माता शक्ति का दिव्य मिलन हुआ था, इसी कारण यह रात्रि केवल भक्ति की नहीं, बल्कि ऊर्जा, संतुलन और सौभाग्य की भी रात्रि मानी जाती है। इस वर्ष महाशिवरात्रि अत्यंत शुभ योगों में आ रही है, जिससे इसका आध्यात्मिक और फलदायी महत्व और अधिक बढ़ गया है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन किए गए छोटे-से-छोटे उपाय भी कई गुना फल प्रदान करते हैं और वर्षों से रुके कार्य अचानक गति पकड़ लेते हैं। शिवलिंग स्वयं में ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रतीक है। यह सृष्टि के आदि और अंत का संकेतक है, जहां रूप और निराकार का संगम होता है। जब भक्त महाशिवरात्रि के दिन शिवलिंग का अभिषेक करता है, तो वह केवल एक मूर्ति पर जल या दूध नहीं चढ़ाता, बल्कि वह अपने अहंकार, अपने दुख, अपने भय और अपनी इच्छाओं को उस परम सत्ता के चरणों में समर्पित करता है। इसी समर्पण से जीवन में परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू होती है। शास्त्रों में वर्णित है कि इस दिन किया गया अभिषेक पापों के क्षय के साथ-साथ भाग्य के बंद द्वार भी खोल देता है।

धन, सुख और शांति हर व्यक्ति की मूल आकांक्षा होती है, लेकिन अक्सर परिश्रम के बावजूद जीवन में रुकावटें बनी रहती हैं। महाशिवरात्रि पर शिवलिंग पर विशेष सामग्री चढ़ाने के पीछे यही भाव छिपा है कि प्रकृति के तत्वों के माध्यम से हम अपनी समस्याओं को शिव तत्व में विलीन कर दें। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति लंबे समय से कर्ज से परेशान है, आर्थिक दबाव में जी रहा है या आय के स्रोतों में बाधा आ रही है, तो शास्त्रों में गन्ने के रस से शिवलिंग का अभिषेक करने की परंपरा बताई गई है। गन्ना मधुरता, वृद्धि और निरंतरता का प्रतीक है। माना जाता है कि गन्ने का रस चढ़ाने से घर में माता लक्ष्मी का वास होता है और धीरे-धीरे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने लगती है। यह उपाय केवल धन के आगमन का नहीं, बल्कि धन के सही उपयोग और स्थायित्व का भी संकेत देता है।

मानसिक तनाव, भय और रोग आज के जीवन की सबसे बड़ी समस्याएं बन चुकी हैं। ऐसे में महाशिवरात्रि पर कच्चे दूध से शिवलिंग का अभिषेक विशेष फलदायी माना गया है। दूध चंद्रमा से जुड़ा हुआ तत्व है और चंद्रमा मन का कारक होता है। दूध चढ़ाने से चंद्रमा मजबूत होता है, जिससे मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन और नींद से जुड़ी समस्याओं में सुधार होता है। साथ ही शहद का अभिषेक करने से शरीर में जमी नकारात्मक ऊर्जा धीरे-धीरे समाप्त होती है। शहद को आयुर्वेद में अमृत समान माना गया है और धार्मिक दृष्टि से यह वाणी की मधुरता, संबंधों की सहजता और पुराने रोगों से मुक्ति का प्रतीक है।

महादेव को प्रकृति अत्यंत प्रिय है, इसलिए वृक्षों और पत्तों से जुड़ी सामग्रियों का विशेष महत्व है। बिल्व पत्र शिव को सबसे प्रिय माना गया है। कहा जाता है कि बिल्व पत्र में त्रिदेवों का वास होता है और इसे शिवलिंग पर चढ़ाने से व्यक्ति के तीनों ताप—दैहिक, दैविक और भौतिक—शांत होते हैं। बहुत कम लोग जानते हैं कि शमी पत्र भी शिव को अर्पित करने से विशेष लाभ मिलता है। शमी पत्र चढ़ाने से शनि दोष में कमी आती है, जीवन की अड़चनें दूर होती हैं और लंबे समय से सोई हुई किस्मत जागने लगती है। बिल्व पत्र हमेशा उल्टा करके चढ़ाने की परंपरा है और उस पर चंदन से 'ॐ' लिखना अत्यंत शुभ माना गया है, क्योंकि 'ॐ' स्वयं शिव का बीज मंत्र है।

यदि विवाह में देरी हो रही हो, वैवाहिक जीवन में तनाव हो या रिश्तों में कड़वाहट बढ़ गई हो, तो महाशिवरात्रि पर केसर मिश्रित जल से शिवलिंग का अभिषेक करने की मान्यता है। केसर पवित्रता, प्रेम और आकर्षण का प्रतीक है। इसके साथ इत्र अर्पित करने से वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा फैलती है और संबंधों में मधुरता आती है। यह उपाय केवल विवाह से जुड़ी समस्याओं के लिए नहीं, बल्कि पारिवारिक सौहार्द और दांपत्य सुख के लिए भी प्रभावी माना गया है।

महाशिवरात्रि की पूजा विधि भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी सामग्री। इस दिन सुबह जल्दी उठकर, स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करना चाहिए और मन को शांत करके शिव मंदिर जाना चाहिए। शिवलिंग पर पहले शुद्ध जल, फिर दूध, दही, घी, शहद और अंत में पुनः शुद्ध जल से अभिषेक किया जाता है। यह क्रम पंचतत्वों के संतुलन का प्रतीक है। भस्म का तिलक लगाना जीवन की नश्वरता का स्मरण कराता है और अहंकार को दूर करता है। बिना टूटे हुए अक्षत चढ़ाने से अखंड लक्ष्मी की प्राप्ति का संकेत मिलता है, क्योंकि अक्षत पूर्णता और निरंतरता का प्रतीक है।

पूजा के दौरान "ॐ नमः शिवाय" का मन ही मन जप करते रहना अत्यंत आवश्यक माना गया है। यह मंत्र केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि पंचाक्षरी मंत्र है, जो शरीर, मन और आत्मा के पांच स्तरों को शुद्ध करता है। महाशिवरात्रि की रात्रि का विशेष महत्व है, क्योंकि यह रात्रि जागरण और साधना की रात्रि होती है। कहा जाता है कि इस रात जागकर शिव चालीसा, शिव स्तुति या शिव पुराण का पाठ करने से साधक को विशेष पुण्य प्राप्त होता है और उसकी चेतना उच्च स्तर पर पहुंचती है।

महाशिवरात्रि का वास्तविक उद्देश्य केवल मनोकामनाओं की पूर्ति नहीं, बल्कि स्वयं के भीतर छिपे शिव तत्व को पहचानना है। जब व्यक्ति श्रद्धा और विश्वास के साथ शिवलिंग पर सामग्री अर्पित करता है, तो वह बाहरी उपाय के साथ-साथ आंतरिक परिवर्तन की प्रक्रिया भी शुरू करता है। यही कारण है कि इस दिन किए गए उपाय केवल तात्कालिक लाभ नहीं देते, बल्कि जीवन की दिशा को धीरे-धीरे सकारात्मक रूप से बदल देते हैं।

इसलिए महाशिवरात्रि को केवल एक रस्म की तरह न मनाएं, बल्कि इसे आत्मचिंतन, समर्पण और साधना का अवसर बनाएं। जब मन सच्चे भाव से महादेव के चरणों में झुकता है, तब भाग्य के द्वार अपने आप खुलने लगते हैं। शिव कृपा केवल मांगने से नहीं, बल्कि समझने और अपनाने से मिलती है। महाशिवरात्रि उसी समझ और उसी कृपा का महापर्व है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

विसावदर में ऑर्गेनिक फार्मिंग को मार्केट मिले उस दिशा में AAP विधायक गोपाल इटालिया का किसानहितैषी प्रयास

▸▸ मोटा कोटड़ा गांव में ऑर्गेनिक फार्मिंग मुद्दे पर किसानहितैषी बैठक में विधायक गोपाल इटालिया उपस्थित रहे

▸▸ विसावदर–भेंसाण के ऑर्गेनिक फार्मिंग करने वाले किसानों के लिए प्लेटफॉर्म खड़ा करने की तैयारी: गोपाल इटालिया

▸▸ विसावदर भेंसाण के किसान ऑर्गेनिक फार्मिंग करते हैं, लेकिन लोगों तक इसकी पर्याप्त जानकारी नहीं: गोपाल इटालिया

▸▸ ऑर्गेनिक फार्मिंग का प्लेटफॉर्म खड़ा करने तथा ई-कॉमर्स, मार्केटिंग, पैकेजिंग जैसे काम कर सकने वाले लोग मुझसे संपर्क करें: गोपाल इटालिया

(जीएनएस)। अहमदाबाद/जूनागढ़/गुजरात। आम आदमी पार्टी के विसावदर के विधायक गोपाल इटालिया ने आज प्राकृतिक खेती के मुद्दे पर विसावदर तालुका के मोटा कोटड़ा गांव में एक किसानहितैषी बैठक में भाग लिया। विसावदर और भेंसाण जूनागढ़ तालुका में प्राकृतिक खेती (ऑर्गेनिक फार्मिंग) करने वाले किसानों को मार्केट मिले, किसानों को लाभ हो और प्राकृतिक खेती में क्या-क्या किया जा सकता है, इसकी जानकारी देने के उद्देश्य से इस किसानहितैषी बैठक का आयोजन किया गया था। इस बैठक के संदर्भ में विधायक गोपाल इटालिया ने फेसबुक लाइव के माध्यम से कहा कि प्राकृतिक खेती क्या होती है, इसके क्या फायदे हैं और विधायक के रूप में मैं किसानों की किस प्रकार मदद कर सकता हूं, इस बारे में जानकारी प्राप्त करने में मेरी रुचि थी, इसी कारण हमने इस बैठक का आयोजन किया। गिरनार पर्वत के चारों ओर का 90 प्रतिशत क्षेत्र विसावदर-भेंसाण क्षेत्र से जुड़ा हुआ है और इस इलाके में बहुत बड़ी संख्या में

किसान ऑर्गेनिक फार्मिंग करते हैं, लेकिन लोगों

को इसके बारे में जानकारी नहीं है। मतलब इस क्षेत्र के किसानों के पास उपजाऊ जमीन है, पानी है, जंगल हैं, पहाड़ हैं और मेहनती किसान हैं, लेकिन एक अच्छा मार्केट नहीं है। इसलिए आने वाले समय में और बैठकें करके ऑर्गेनिक खेती का मार्केट किस प्रकार खड़ा किया जाए, इसका प्लान बनाएंगे। गोपाल इटालिया ने कहा कि इस वीडियो के माध्यम से मैं सभी लोगों से कहना चाहता हूं कि जो लोग ऑर्गेनिक फार्मिंग के लिए कोई प्लेटफॉर्म खड़ा करने में मदद कर सकते हैं, साथ ही सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स, मार्केटिंग, ब्रांडिंग, पैकेजिंग जैसे कार्यों के संदर्भ में जो भी लोग हमारी मदद करना चाहते हों, वे हमसे संपर्क करें। गुजरात भर से लोग इस कार्य को सपोर्ट देंगे और भेंसाण-विसावदर के किसानों से ऑर्गेनिक वस्तुएं खरीदेंगे तो मेरे किसानों का उत्साह बढ़ेगा। फिलहाल ऐसे एक सामान्य विचार के साथ यह बैठक की गई थी और आशा है कि आने वाले समय में हम एक बड़ा प्लेटफॉर्म खड़ा करेंगे।

आफिसर्स स्पोर्ट्स मीट में वडोदरा मंडल ने जीती कलचरल एवं स्पोर्ट्स शील्ड,39 पदक जीतकर खिलाड़ियों का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल ने पश्चिम रेलवे आफिसर्स एसोसिएशन द्वारा मुंबई में आयोजित 45 वीं ऑफिसर्स स्पोर्ट मीट में प्रधान कार्यालय एवं सभी मंडलों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए पूनूस ट्रॉफी को एक बार फ़िर से जीत लिया है। स्पोर्ट्स प्रतिस्पर्धा में वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने एथेलेटिक्स के सिंगल एवं रिले रन और पश्चिम रेलवे महिला कल्याण मंडल के वडोदरा मंडल की अध्यक्षा श्रीमती कविता भडके ने एथेलेटिक्स के महिला वर्ग में सिंगल एवं रिले रन में पदक जीतकर मंडल के अन्य खिलाड़ियों को स्पोर्ट्स मीट में पदक जीतने को प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया। वडोदरा मंडल के खिलाड़ियों ने इस मीट में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 25 गोल्ड और 14 सिल्वर सहित कुल 39 मैडल जीते। पश्चिम रेलवे एवं मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके को शील्डें एवं खिलाड़ी विजेताओं को मेडल प्रदान किये। स्पोर्ट्स प्रतियोगिता में वडोदरा मंडल के खिलाड़ियों ने पुरुष वर्ग में टेबल टेनिस सिंगल, डबल एवं मिक्स,बैडमिंटन सिंगल एवं मिक्स, टेबल टेनिस, एथलेटिक्स,

स्लो साइकिल, स्क्वैश सिंगल एवं डबल में गोल्ड मैडल जीता तो वही महिला वर्ग में टेबल टेनिस, स्लो साइकिल, रन फॉर रन, बैडमिंटन, एथेलिटिक्स में गोल्ड जीता। पुरुषों की टीम ने वॉलीवॉल एवं महिलाओं की टीम ने बॉक्स क्रिकेट में गोल्ड जीता।

मंडल की पुरुष एवं महिला टीम ने टेनिस सिंगल, शतरंज, कैरम सिंगल एवं डबल , एथेलेटिक्स सिंगल एवं टीम स्पर्धा में रजत पदक जीता। मंडल की महिला खिलाड़ियों ने स्विमिंग, हेयरस्टाइल और ग्रुप फ्लावर मेकिंग में कांस्य पदक जीता। डांस एवं वोकल कला में भी अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन करते हुए वडोदरा मंडल ने कलचरल शील्ड भी जीत ली है। मीट में आयोजित सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं में सोलो डांस, ग्रुप डांस , वोकल और इंस्ट्रुमेंटल प्रतियोगिताएं में वड़ोदरा मंडल के अधिकारियों और उनकी पत्नियों तथा रेलकारियों के बच्चों ने कला के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का बेजोड़ प्रदर्शन किया और प्रधान कार्यालय एवं सभी मंडलों के बीच श्रेष्ठ प्रदर्शन कर कल्चरल शील्ड को हासिल किया। ग्रुप डांस के अधिकारी और उनकी पत्नी तथा 10 वर्ष या उससे कम वर्ष के बच्चों के वर्ग में वड़ोदरा मंडल प्रथम रहा। सोलो डांस में अधिकारी और उनकी पत्नी वर्ग में हेतल शर्मा और 10 -14 वर्ग के बच्चों के वर्ग में तनीषा रंजन ने प्रथम, 10 वर्ष या उससे कम वर्ष की श्रेणीं में इवांशी कौशिक ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वोकल में 10 -14 वर्ग के बच्चों के वर्ग में आर्य अध्यापक द्वितीय और 10 वर्ष या उससे कम वर्ष की श्रेणीं में शानवी अध्यापक तृतीय स्थान पर रहीं। इंस्ट्रुमेंटल में 14 -18 वर्ग के बच्चों के वर्ग में शौर्य कुमार प्रथम और 10 -14 वर्ग के बच्चों के वर्ग में आर्य अध्यापक द्वितीय स्थान पर रहे।

मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने सभी विजयी खिलाड़ियों को उनके खेल प्रदर्शन के लिए बधाई दी। उन्होंने कल्चरल और स्पोर्ट्स को अभिव्यक्ति का एक साधन बताया और नयी पीढ़ी से इसमें ज्यादा से ज्यादा भाग लेने की अपील की।

गणतंत्र पर्व की पूर्व संध्या पर थराद में 'सरहद का साद - नूतन वाव थराद' मल्टीमीडिया सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

▸▸ विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन तथा उल्लेखनीय योगदान देने वाले जिले की 16 विशिष्ट व्यक्तियों का राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री के करकमलों द्वारा सम्मान

▸▸ वाव थराद जिले को 207 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की भेंट

▸▸ मुख्यमंत्री के करकमलों से जिला कलेक्टर एवं जिला विकास अधिकारी को विकास कार्यों के लिए 2.50 करोड़ रुपए के चेक प्रदान

राज्यपाल आचार्य देवव्रत

▸▸ राज्यपाल ने गणतंत्र पर्व पर वाव थराद की जनता की शालीनता और संस्कारों की सराहना की

▸▸ राज्यपाल ने जिलावासियों से शिक्षा, संस्कार एवं प्राकृतिक खेती का संदेश देते हुए वाव थराद को 'मॉडल जिला' बनाने का आह्वान किया

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ मुख्यमंत्री के करकमलों से जिला कलेक्टर एवं जिला विकास अधिकारी को विकास कार्यों के लिए 2.50 करोड़ रुपए के चेक प्रदान

▸▸ वाव थराद जिला सौर ऊर्जा में अग्रणी बने, यह सरकार का दृढ़ संकल्प

विकसित वाव थराद के रोडमैप द्वारा विकसित गुजरात एवं विकसित भारत के संकल्प को साकार करने का आह्वान

अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी

▸▸ जीआईडीसी के माध्यम से स्थानीय किसान उद्योगपति बनेंगे और कृषि उत्पादों के निर्यात को गति मिलेगी

▸▸ नए वाव थराद जिले को भेंट देने के लिए सीमावर्ती क्षेत्र के लोग मुख्यमंत्री के ऋणी रहेंगे

(जीएनएस)। गांधीनगर : 77वें गणतंत्र दिवस 2026 की राज्य स्तरीय समारोह श्रंखला अंतर्गत रविवार को नवगठित वाव थराद जिले में गणतंत्र पर्व की पूर्व संध्या पर थराद के मलुपुर में 'सरहद का साद - नूतन वाव -थराद' मल्टीमीडिया सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में राज्यपाल ने कहा कि वाव थराद नया जिला बनने के बाद पहली बार यहां गणतंत्र पर्व का इतनी भव्य एवं दिव्य रूप से उत्सव मनाया जा रहा है, जिसके लिए समस्त जिलावासी अभिनंदन के पात्र हैं।

राज्यपाल ने कहा, "गुजरात में राज्यपाल के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान मैंने अनेक भव्य कार्यक्रम देखे हैं, परंतु यहां की जनता में जो शालीनता, सभ्यता और सरलता दिखाई देती है, वैसी मैंने पहले कभी नहीं देखी। यहां के लोग अत्यंत भले और संस्कारी हैं।" उन्होंने मुख्यमंत्री द्वारा नवगठित जिले के लिए घोषित विभिन्न विकास कार्यों एवं अनुदान की सराहना करते हुए कहा कि नए जिले के गठन से इस क्षेत्र के विकास को और अधिक गति मिलेगी।

राज्यपाल ने विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी के प्रयासों और बनास डेयरी के योगदान की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस मरुस्थलीय क्षेत्र को हरा-भरा बनाने में सहकारी गतिविधियों का बड़ा योगदान है। साथ ही उन्होंने माता-पिता से अपील की कि बेटा- बेटी के शिक्षा में भेदभाव करे बिना बच्चों को उच्च शिक्षा दें और उन्हें व्यसन मुक्त व संस्कारवान बनाएं, ताकि वे परिवार और देश का गौरव बढ़ा सकें।

पशुपालन से जुड़े इस क्षेत्र के किसानों को राज्यपाल ने 'जहर-मुक्त खेती' अर्थात प्राकृतिक खेती अपनाने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा, "यदि आप प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ेंगे तो पर्यावरण, धरती माता और गौ माता की रक्षा होगी, लोगों का स्वास्थ्य सुधरेगा और भूमिगत जलस्तर भी ऊंचा आएगा।" उन्होंने जिलावासियों से वाव थराद जिले को प्राकृतिक खेती में 'मॉडल जिला' बनाने का आह्वान किया।

राज्यपाल ने 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' श्लोक के साथ सभी के उत्तम स्वास्थ्य एवं सुख-समृद्धि की मंगलकामना की।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि आज नवगठित वाव थराद जिले में 77वें गणतंत्र पर्व का पहला राज्य स्तरीय ध्वजवंदन समारोह आयोजित हो रहा है, जो मेरे लिए गर्व और आनंद का क्षण है। सुबह से जिले की जनता में जो उत्साह, उमंग और देशभक्ति का वातावरण देखने को मिल रहा है, वह इस ऐतिहासिक क्षण को और भी यादगार बना रहा है। इस पावन अवसर पर उन्होंने सभी को 77वें गणतंत्र पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 1947 में हमने अंग्रेजों की गुलामी से स्वतंत्रता प्राप्त की और उसके बाद डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा प्रदत्त संविधान ने हमें लोकतंत्र का मार्ग दिखाया और गणतंत्र पर्व मनाने का अधिकार दिया। गणतंत्र पर्व 140 करोड़ भारतीयों के लोकतंत्र पर अटूट विश्वास का प्रतीक है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' पूरे वर्ष मनाने का संकल्प लिया गया है, ताकि आने वाली पीढ़ी अपने इतिहास, संस्कृति और विरासत से जुड़ सके। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'राष्ट्रहित प्रथम' की भावना से राष्ट्रीय पर्वों को सीमित ढांचे से बाहर निकालकर राज्य के विभिन्न जिलों में मनाने की परंपरा प्रारंभ की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वाव थराद जिले में आयोजित यह पहला राज्य स्तरीय समारोह सीमावर्ती क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के संकल्प का जीवंत उदाहरण है।

उन्होंने आगे कहा कि अंतरराष्ट्रीय सीमा से जुड़ा यह जिला सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। 1965 तथा 1971 के युद्ध के दौरान यहां की जनता ने जो शौर्य और साहस दिखाया, वह आज भी सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। इस अवसर पर उन्होंने रणछोड़ पगी जैसे अद्वितीय देशभक्तों को नमन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिया गया 'ईज ऑफ लिविंग' का मंत्र आज वाव थराद में साकार होता दिखाई दे रहा है। राज्य सरकार ने सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और कनेक्टिविटी जैसे क्षेत्रों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है।

मुख्यमंत्री ने जिलावासियों को जानकारी देते हुए कहा कि वाव थराद जिले में ग्रामीण पंचायत विभाग के विकास के लिए 59 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की गई है। किसानों को फसल क्षति के बदले 395 करोड़ रुपए की सहायता दी गई है।

जल विकास कार्यों के लिए 2500 करोड़ रुपए की विशेष परियोजना लागू की गई है। उन्होंने आगे कहा कि थराद नगरपालिका को ए-ग्रेड में उन्नत किया गया है, जिससे अब उसे वार्षिक 12 करोड़ रुपए की ग्रांट प्राप्त होगा। डबल इंजन सरकार में विकास की गति भी डबल हुई है और कौशल भी डबल हुआ है। राधा नेसडा और मसाली गांवों ने जिले को ग्रीन एनर्जी में विशिष्ट पहचान दिलाई है। आगामी समय में वाव थराद जिला सोलर एनर्जी में अग्रणी बने, यह सरकार का दृढ़ संकल्प है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गणतंत्र पर्व के मेजबान बने वाव थराद जिले को आर्थिक, सामाजिक और आधारभूत संरचना की दृष्टि से और अधिक सशक्त बनाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र के साथ विकसित वाव थराद के रोडमैप द्वारा विकसित गुजरात और विकसित भारत के संकल्प को साकार करने का मुख्यमंत्री ने आह्वान किया।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी ने कहा कि वाव थराद जिले के गठन के मात्र साढ़े तीन महीनों में कलेक्टर कार्यालय के भूमिपूजन के साथ 207 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण होना ऐतिहासिक क्षण है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जीआईडीसी के माध्यम से स्थानीय किसान उद्योगपति बनें और कृषि उत्पादों के निर्यात को गति मिले, ऐसा दूरदर्शी दृष्टिकोण साकार किया है। साथ ही उन्होंने यह भी जोड़ा कि नए वाव थराद जिले की भेंट देने के लिए सीमावर्ती क्षेत्र के लोग मुख्यमंत्री के ऋणी रहेंगे।

अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी ने कहा कि वाव थराद क्षेत्र की जल समस्या के स्थायी समाधान के लिए 2000 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से नर्मदा जल को तालाबों तक पहुंचाने की मंजूरी से क्षेत्र की कायापलट हो जाएगी । उन्होंने सीमावर्ती क्षेत्र के लोगों की देशभक्ति की सराहना करते हुए, 77वें प्रजासत्ताक पर्व के अवसर पर राज्य स्तरीय ध्वजवंदन कार्यक्रम के आयोजन के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल एवं राज्य सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री के करकमलों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन तथा उल्लेखनीय योगदान देने वाले जिले की 16 विशिष्ट व्यक्तियों का सम्मान किया गया, जो जिले के लिए गौरव का क्षण बना । इस अवसर पर 'विकास, विरासत और विश्वास' का प्रतीक वाव थराद पुस्तिका का विमोचन भी किया गया।

जिला कलेक्टर श्री जे.एस. प्रजापति ने स्वागत भाषण में सभी का स्वागत किया।

मुख्यमंत्री ने जिला कलेक्टर एवं जिला विकास अधिकारी को विकास कार्यों के लिए 2.50 करोड़ रुपए के चेक प्रदान किए।

इस अवसर पर 23.23 करोड़ रुपए की लागत से पूर्ण हुए 6 विकास कार्यों का लोकार्पण तथा 184.32 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले 19 नए कार्यों का शिलान्यास कर जिले को कुल 207 करोड़ रुपए की विकास भेंट दी गई।

राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में नृत्य, संगीत और नाटक के त्रिवेणी संगम के माध्यम से नवगठित वाव थराद जिले की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, लोक परंपराओं और सीमावर्ती क्षेत्र की देशभक्ति भावना का जीवंत और भावपूर्ण प्रदर्शन किया गया। आधुनिक मल्टीमीडिया प्रस्तुति के साथ यह कार्यक्रम दर्शकों के लिए स्मरणीय और प्रेरणादायक अनुभव बना।

इस अवसर पर राज्य स्तरीय मंत्री श्री स्वरूपजी ठाकोर, विधायकगण श्री केशाजी चौहान, श्री मावजीभाई देसाई, श्री लविंगजी ठाकोर, अग्रणी श्री कीर्तिसिंह वाघेला, मुख्यमंत्री के मुख्य सचिव श्री मनोजकुमार दास, अपर मुख्य सचिव डॉ. अंजु शर्मा, अपर सचिव श्री संजीव कुमार, पुलिस महानिदेशक के.एल.एन. राव, प्रभारी सचिव श्री एम. नागराजन सहित कई अधिकारी एवं नागरिक उपस्थित रहे।

77वां गणतंत्र पर्व – राज्य महोत्सव : वाव थराद जिला

वाव थराद जिले के औद्योगिक विकास में ऐतिहासिक कदम

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल के करकमलों से गुजरात औद्योगिक विकास निगम द्वारा 99.23 एकड़ सरकारी भूमि पर स्थापित होने वाली जीआईडीसी औद्योगिक बस्ती का भूमिपूजन

▸▸ विकास की बातें जमीन पर साकार करने का कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया है

▸▸ नवगठित वाव थराद जिला विकसित जिलों की पंक्ति में शीघ्रता से आए, इसके लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध

▸▸ दूधवा जीआईडीसी कार्यरत होने से उत्पादन के मूल्यवर्धन द्वारा 'वोकल फॉर लोकल' को गति मिलेगी और रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे : मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल

▸▸ दूधवा जीआईडीसी का निर्माण होने पर सीमावर्ती क्षेत्र के विकास के लिए आर्थिक प्रगति के नवीन द्वार खुलेंगे : विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी

(जीएनएस)। गांधीनगर, 25 जनवरी : 7वें गणतंत्र पर्व का राज्य-स्तरीय समारोह नवगठित वाव थराद जिले में आयोजित किया जा रहा है । इस आयोजन के अंतर्गत मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल के करकमलों से रविवार को इस जिले के दूधवा में गुजरात औद्योगिक विकास निगम (जीआईडीसी) द्वारा 99.23 एकड़ सरकारी भूमि पर निर्मित होने वाली औद्योगिक बस्ती का भूमिपूजन गौरवपूर्ण एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल ने इस अवसर पर कहा कि जीआईडीसी के निर्माण से नए जिले के विकास को गति मिलेगी, साथ ही 'वोकल फॉर लोकल' का प्रधानमंत्री का लक्ष्य भी साकार होगा। इतना ही नहीं, सीमावर्ती जिले में युवाओं को अधिक रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विकास सही अर्थों में जमीन पर साकार हो, इसके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का निरंतर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है। प्रधानमंत्री ने सड़क- मार्ग, पेयजल, स्वास्थ्य सहित प्रत्येक क्षेत्र में देश के नागरिकों की भलाई की चिंता की है और सुदूरवर्ती व्यक्ति को केंद्र में रखकर विकासोन्मुखी योजनाएं लागू की हैं। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि नवगठित वाव थराद जिले का विकास भी अन्य विकसित जिलों के समान तीव्र गति से हो, इसके लिए राज्य सरकार प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है।

श्री पटेल ने आगे कहा कि इस क्षेत्र में कृषि के लिए तालाब, ड्रिप इरिगेशन जैसी आधुनिक पद्धतियों का व्यापक उपयोग हो रहा है, यह आनंद की बात है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी दूरदर्शी नेता हैं, क्योंकि आज पानी उपलब्ध है तो भविष्य में भी पानी उपलब्ध रहे; इसके लिए उन्होंने पूर्व योजना बनाई है। 'कैच द रेन' अभियान अंतर्गत अतिरिक्त वर्षा जल के संग्रह के लिए देशभर में आयोजनबद्ध अभियान चलाया गया है, जो आने वाली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक समान पुण्य कार्य है।

उन्होंने जोड़ा कि खेती के आलावा उत्पादन के मूल्यवर्धन पर भी विचार किया गया है। वैल्यू एडिशन के लिए छोटे-बड़े उद्योग स्थापित हो सकें और 'वोकल फॉर लोकल' से 'लोकल टू ग्लोबल' का लक्ष्य साकार हो; इसके लिए आने वाले दिनों में यह जीआईडीसी एस्टेट महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2003 में वाइब्रेंट गुजरात की शुरुआत की, जिसके परिणामस्वरूप आज एमएसएमई की संख्या 1 लाख 68 हजार से बढ़कर 27 लाख से अधिक हो गई है। इस मजबूत आधार के कारण देश सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर हो रहा है और आज हम सभी 'विकसित भारत' के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

इस अवसर पर गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी ने मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार ने इस सीमावर्ती क्षेत्र के विकास के लिए आर्थिक प्रगति के नए द्वार खोल दिए हैं। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र का किसान मेहनती है। अनार हो या अन्य फसल; यहां का उत्पादन अब तक प्रोसेसिंग के लिए राजकोट, अहमदाबाद या अन्य राज्यों में जाता था। अब दूधवा में जीआईडीसी बनने से कृषि उत्पादों का 'वैल्यू एडिशन' यहीं होगा, जिससे किसानों की आय दोगुनी होगी और स्थानीय युवाओं को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे।

श्री चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प को साकार करने के लिए मुख्यमंत्री ने केवल एक वर्ष की अल्प अवधि में जीआईडीसी को मंजूरी दी और आज उसका भूमिपूजन भी संपन्न कराया। साथ ही, प्रथम चरण के लिए 15 से 16 करोड़ रुपए के सड़क और बुनियादी सुविधाओं के कार्यों को भी स्वीकृति प्रदान की गई है।

श्री शंकरभाई चौधरी ने भावुक स्वर में कहा कि मुख्यमंत्री ने इस सीमावर्ती क्षेत्र को नया जिला बनाकर प्रशासनिक सुविधा प्रदान की है। इतना ही नहीं, इस वर्ष यहां गणतंत्र पर्व की राज्य स्तरीय समारोह एवं ध्वजारोहण कार्यक्रम भी आयोजित कर विकास को गति दी है।

भूतकाल की बाढ़ की घटनाओं को याद करते हुए अध्यक्ष ने कहा कि जब यह क्षेत्र संकट में था, तब मुख्यमंत्री श्री स्वयं मौके पर पहुंचे थे, लोगों का दुख साझा किया था और उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की थी। कृषि फसलों को हुए नुकसान के मामलों में भी सरकार ने सदैव संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाया है।

इस अवसर पर खादी एवं कुटीर ग्राम उद्योग राज्य मंत्री श्री स्वरूपजी ठाकोर, दियोदर विधायक श्री केशाजी चौहान, जिला प्रभारी सचिव श्री नागराजन, जीआईडीसी की प्रबंध निदेशक सुश्री प्रवीणा डी. के., कार्यकारी निदेशक श्री भरत जोशी, जिला कलेक्टर श्री जे. एस. प्रजापति सहित जिले के वरिष्ठ अधिकारी, पदाधिकारी एवं नागरिक उपस्थित रहे।

नवगठित वाव थराद जिले को मिलेगा अत्याधुनिक जिला सेवा सदन

▸▸ 77वें गणतंत्र पर्व की राज्य स्तरीय समारोह का पहली बार मेजबान बने जिले के विकास की नई दिशा

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने लगभग 70 करोड़ रुपए की लागत से 39 एकड़ में बनने वाले जिला सेवा सदन का भूमि पूजन किया

▸▸ विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी एवं राज्य मंत्री श्री स्वरूपजी ठाकोर की प्रेरक उपस्थिति

▸▸ जिले के नागरिकों को एक ही स्थान पर सरकार के विभिन्न विभागों की सेवाएं उपलब्ध होंगी

▸▸ नवगठित वाव थराद जिले को आगामी दिनों में एक नया अत्याधुनिक जिला सेवा सदन मिलेगा

▸▸ यह नया निर्माण होने वाला सेवा सदन जिले के सर्वांगीण विकास को नई दिशा प्रदान करेगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : 77वें गणतंत्र पर्व की राज्य स्तरीय समारोह का पहली बार मेजबान बने वाव थराद जिले में महत्वपूर्ण विकास कार्य का शुभारंभ किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने थराद में लगभग 70 करोड़ रुपए की लागत से 39 एकड़ क्षेत्र में बनने वाले जिला सेवा सदन का भूमिपूजन एवं शिलान्यास (तख्ती अनावरण) संपन्न किया।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी तथा राज्य मंत्री श्री स्वरूपजी ठाकोर उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सुशासन के दृष्टिकोण के अनुरूप नागरिकों को सभी सरकारी सेवाएं एक ही स्थान पर सरलता से उपलब्ध हों, इस उद्देश्य से जिला मुख्यालयों पर जिला सेवा सदन के निर्माण का दृष्टिकोण अपनाया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए नवगठित वाव थराद जिले में आधुनिक सेवा सदन का निर्माण किया जाएगा।

इस नए जिला सेवा सदन में जिला कलेक्टर कार्यालय सहित राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के 30 से अधिक जिला स्तरीय कार्यालय कार्यरत किए जाएंगे। इसके परिणामस्वरूप जिले के नागरिकों को एक ही स्थान से सरकार के विभिन्न विभागों की सेवाएं सरलता से प्राप्त होंगी तथा उनके समय और संसाधनों की बचत होगी, साथ ही प्रशासनिक कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

वाव थराद जिले के इस सेवा सदन का निर्माण ग्रीन बिल्डिंग के मानकों के अनुसार किया जाएगा। इसमें सोलर रूफ टॉप, वर्षा जल संचय की व्यवस्था, विशाल मीटिंग हॉल, अत्याधुनिक लिफ्ट तथा बेसमेंट पार्किंग जैसी सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी।

इस अवसर पर दियोदर विधायक श्री केशाजी चौहान, जिला प्रभारी सचिव श्री नागराजन, जिला कलेक्टर श्री जे. एस. प्रजापति, जिला विकास अधिकारी श्री कार्तिक जीवाणी,सड़क एवं भवन विडाग के सचिव श्री पी. आर. पटेलिया, विशेष सचिव श्री जे. ए. गांधी, अधीक्षण अभियंता श्री एल. डी. चौधरी, कार्यपालक अभियंता श्री तेजस मांगुकिया सहित अन्य पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

अहमदाबाद–विरमगाम सेक्शन के बीच ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित

(जीएनएस)। अहमदाबाद–विरमगाम सेक्शन के साबरमती ए केबिन और साबरमती स्टेशन के बीच ऑटोमैटिक सिगनलिंग सिस्टम चालू करने के लिए 27 जनवरी, 2026 को 08:30 बजे से 20:30 बजे तक 12 घंटे का ब्लॉक लिया जाएगा। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 27 जनवरी, 2026 को प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः-

शॉर्ट टर्मिनेट होने वाली ट्रेनेंः-

1. ट्रेन संख्या 20901/20902 मुंबई सेंट्रल–गांधीनगर केपिटल वंदे भारत एक्सप्रेस अहमदाबाद में शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन अहमदाबाद और गांधीनगर केपिटल स्टेशनों के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

निरस्त होने वाली ट्रेनेंः-

1. ट्रेन संख्या 20959 वलसाड–वडनगर सुपरफास्ट एक्सप्रेस निरस्त रहेगी। इसी तरह, ट्रेन संख्या 20960 वडनगर–वलसाड सुपरफास्ट एक्सप्रेस निरस्त रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली ट्रेनेंः-

1. ट्रेन संख्या 12216 बांद्रा टर्मिनस–दिल्ली सराय रोहिल्ला गरीब रथ को परिवर्तित मार्ग वाया अहमदाबाद–साबरमती ए केबिन–चांदलोडिया–खोडियार स्टेशनों के रास्ते चलाया जाएगा।
2. ट्रेन संख्या 14807 जोधपुर–दादर एक्सप्रेस को परिवर्तित मार्ग वाया खोडियार–चांदलोडिया–साबरमती ए केबिन–अहमदाबाद स्टेशनों के रास्ते चलाया जाएगा और इस ट्रेन का साबरमती जंक्शन पर अतिरिक्त ठहराव होगा। इसलिए, यह ट्रेन साबरमती ब्रॉड गेज स्टेशन पर नहीं रुकेगी।

भावनगर टर्मिनस यार्ड में पिट लाइन के कार्य हेतु लिए गए ब्लॉक की अवधि को बढ़ा दिया गया है जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेंगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के भावनगर टर्मिनस स्टेशन यार्ड में पिट लाइन संख्या–2 के मरम्मत कार्य हेतु ब्लॉक 45 दिनों का ब्लॉक लिया गया था, जिसकी अवधि को बढ़ा दिया गया है। इस कारण कुछ ट्रेनें 26 और 27 जनवरी, 2026 को भी प्रभावित रहेंगी। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार प्रभावित ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार हैः

निरस्त (Cancel) की जाने वाली ट्रेनें

1. ट्रेन नंबर 59228/59233 भावनगर–सुरेंद्रनगर–भावनगर पैसेन्जर 26.01.2026 को निरस्त रहेगी।
2. ट्रेन नंबर 59267/59268 भावनगर–पालिताना–भावनगर पैसेन्जर 26.01.2026 को निरस्त रहेगी।
3. ट्रेन नंबर 59269/59270 भावनगर–पालिताना–भावनगर पैसेन्जर 26.01.2026 को निरस्त रहेगी।
4. ट्रेन नंबर 59230 भावनगर–बोटाद पैसेन्जर 26.01.2026 को निरस्त रहेगी।
5. ट्रेन नंबर 59229 बोटाद-भावनगर पैसेन्जर 27.01.2026 को निरस्त रहेगी।
6. ट्रेन नंबर 59204/59271 भावनगर–बोटाद–भावनगर पैसेन्जर 26.01.2026 को निरस्त रहेगी।
7. ट्रेन नंबर 59235 धोला-महुवा पैसेन्जर 26.01.2026 को निरस्त रहेगी।
8. ट्रेन नंबर 59236 महुवा-धोला पैसेन्जर 27.01.2026 को निरस्त रहेगी।
9. ट्रेन नंबर 09529/09530 धोला–भावनगर–धोला टीओडी स्पेशल 26.01.2026 को निरस्त रहेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि असुविधा से बचने के लिए यात्रा से पूर्व संबंधित स्टेशन अथवा रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in से अद्यतन जानकारी प्राप्त करें।

प्रदूषण की गिरफ्त में जिंदगी, सेहत और रोज़गार पर मंडराता खतरा : राहुल गांधी की चेतावनी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश में बढ़ते वायु प्रदूषण को लेकर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने एक बार फिर गंभीर चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि प्रदूषण अब केवल पर्यावरण या स्वास्थ्य का मुद्दा नहीं रह गया है, बल्कि यह सीधे तौर पर आम लोगों की जिंदगी और रोज़गार पर हमला कर रहा है। हर सांस के साथ लोग इसकी कीमत चुका रहे हैं—कभी बीमारियों के रूप में तो कभी घटती कमाई और असुरक्षित जीवन के तौर पर। राहुल गांधी ने कहा कि करोड़ों भारतीय रोज़ इस संकट का सामना कर रहे हैं और इसका सबसे गहरा असर बच्चों, बुजुर्गों और मेहनतकश वर्ग पर पड़ रहा है।

राहुल गांधी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वायु प्रदूषण धीरे-धीरे एक राष्ट्रीय आपदा का रूप ले चुका है, जिसे अब नजरअंदाज करना देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ होगा। उन्होंने कहा कि अस्थमा, एलर्जी, फेफड़ों की बीमारियां और हृदय संबंधी समस्याएं लगातार बढ़ रही हैं, जिनका सीधा संबंध जहरीली हवा से है। बच्चों की बढ़ती सांस की तकलीफ और बुजुर्गों की कमजोर होती सेहत इस बात का प्रमाण है कि प्रदूषण आने वाली पीढ़ियों के लिए भी बड़ा खतरा बन चुका है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रदूषण का असर केवल अस्पतालों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों की रोज़ी-रोटी को भी निगल रहा है। निर्माण स्थलों पर काम करने वाले मजदूर, रेहड़ी-पटरी वाले, ट्रैफिक पुलिस, डिलीवरी कर्मी और खुले में मेहनत करने वाले लाखों लोग जहरीली हवा में काम करने को मजबूर हैं। खराब हवा के कारण कई दिनों तक काम बंद करना पड़ता है, जिससे दिहाड़ी मजदूरों की आमदनी सीधे प्रभावित होती है। राहुल गांधी ने कहा कि जब सरकारें प्रदूषण को गंभीरता से नहीं लेतीं, तो उसकी सबसे बड़ी कीमत गरीब और मध्यम वर्ग को चुकानी पड़ती है।

राहुल गांधी ने चेतावनी दी कि इस संकट को टालने या मौसम के भरोसे छोड़ देने से समाधान नहीं निकलेगा। उन्होंने कहा कि हर साल सर्दियों में प्रदूषण बढ़ता है और फिर कुछ महीनों की राहत के

बाद मामला ठंडे बस्ते में चला जाता है, लेकिन यह चक्र देश के लिए बेहद खतरनाक है। उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रदूषण से निपटने के लिए दीर्घकालिक और ठोस नीतियों की जरूरत है, न कि केवल तात्कालिक उपायों की।

इस मुद्दे पर जनता की भागीदारी को जरूरी बताते हुए राहुल गांधी ने कहा कि बदलाव की शुरुआत आवाज उठाने से होती है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे सामने आएं और बताएं कि वायु प्रदूषण ने उनके जीवन, सेहत और कामकाज को किस तरह प्रभावित किया है। इसी उद्देश्य से उन्होंने एक लिंक साझा किया है, जिसके जरिए लोग अपने अनुभव और परेशानियां साझा कर सकते हैं। राहुल गांधी ने कहा कि जनता की वास्तविक पीड़ा को सामने लाना और उसे नीति निर्माण का हिस्सा बनाना उनकी जिम्मेदारी है।

इसी बीच दिल्ली-एनसीआर में करीब 100 दिनों के बाद वायु गुणवत्ता में कुछ हद तक सुधार दर्ज किया गया है। हालिया बारिश के चलते प्रदूषण के स्तर में कमी आई है और लोगों को थोड़ी राहत महसूस हुई है। शनिवार को दिल्ली का एयर क्वालिटी इंडेक्स 242 से 256 के बीच रहा, जो दोपहर बाद घटकर लगभग 190 तक पहुंच गया। रविवार दोपहर को AQI और बेहतर होकर 155 दर्ज किया गया, जिसे 'मध्यम' श्रेणी में रखा गया है।

ऊर्जा और स्वच्छ वायु अनुसंधान केंद्र (CREA) की रिपोर्ट के अनुसार, इससे पहले 13 अक्टूबर 2025 को दिल्ली की हवा कुछ हद तक बेहतर स्थिति में थी, जब AQI 189 दर्ज किया गया था। इसके बाद 14 अक्टूबर से राजधानी की हवा लगातार खराब और बेहद खराब श्रेणी में बनी रही। विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा राहत अस्थायी है और मौसम बदलते ही प्रदूषण फिर गंभीर स्तर पर पहुंच सकता है।

विशेषज्ञों और पर्यावरणविदों का मानना है कि जब तक उद्योग, परिवहन, निर्माण कार्य और कृषि से जुड़े प्रदूषण स्रोतों पर सख्त और स्थायी कदम नहीं उठाए जाते, तब तक हालात में स्थायी सुधार संभव नहीं है। राहुल गांधी ने भी इसी ओर इशारा करते हुए कहा कि साफ हवा हर नागरिक का अधिकार है और इसे सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है। उनका कहना है कि अगर अभी निर्णायक कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले वर्षों में प्रदूषण देश की सबसे बड़ी सामाजिक और आर्थिक चुनौती बन सकता है।

मिट्टी के ढहते पहाड़ तले उजड़ गईं जिंदगियां, सिंगरौली हादसे ने फिर खड़े किए सुरक्षा पर सवाल

(जीएनएस)। जबलपुर/सिंगरौली। मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिले में रविवार दोपहर एक दिल दहला देने वाला हादसा हो गया, जिसने पूरे इलाके को गहरे शोक में डुबो दिया। जियावन थाना क्षेत्र के परसोहर गांव में छुई यानी पोतने वाली मिट्टी निकालते समय एक असुरक्षित मिट्टी खदान अचानक धंस गई। इस हादसे में दो नाबालिग बच्चियों समेत तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गईं। एक पल में हंसता-खेलता माहौल चीख-पुकार और मातम में बदल गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, रविवार दोपहर करीब सवा एक बजे गांव की कुछ महिलाएं और बच्चियां रोजमर्रा के घरेलू कामों के लिए मिट्टी निकालने खदान की ओर गई थीं। यह इलाका पहले से ही कमजोर और धंसान की आशंका वाला बताया जा रहा है, लेकिन मजबूरी में लोग वहां से मिट्टी निकालते रहे हैं। जैसे ही मिट्टी खोदने का काम चल रहा था, अचानक खदान की दीवार का बड़ा हिस्सा भरभराकर गिर पड़ा। भारी मात्रा में मिट्टी एक साथ नीचे आ गिरी और वहां मौजूद पांच लोग उसके नीचे दब गए। हादसा इतना अचानक था कि किसी को बचने या भागने तक का

मौका नहीं मिल सका।

तेज आवाज और चीखें सुनकर आसपास के खेतों और घरों में मौजूद ग्रामीण दौड़ते हुए मौके पर पहुंचे। बिना किसी औपचारिक इंतजार के उन्होंने अपने हाथों, फावड़ों और अन्य औजारों से मिट्टी हटाने की कोशिश शुरू कर दी। कुछ ही देर में पुलिस और स्थानीय प्रशासन को सूचना दी गई। चौकी कुंदवार और जियावन थाना पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए जेसीबी मशीन मंगाई गई और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया। कई घंटों की मशक्कत के बाद दबे हुए लोगों को बाहर निकाला जा सका।

इस दर्दनाक हादसे में 10 वर्षीय प्रीति सिंह, 16 वर्षीय बसंती और 50 वर्षीय फूलमती यादव की जान चली गई। दोनों बच्चियां हरहवा गांव की रहने वाली थीं, जबकि फूलमती यादव बंधा गांव की निवासी बताई जा रही हैं। मासूम बच्चियों की मौत की खबर जैसे ही गांवों में फैली, पूरे इलाके में मातम पसर गया। घरों में चूल्हे ठंडे पड़ गए और हर आंख नम हो गई। घायल महिलाओं कौशल्या सिंह और सकमुनि सिंह को गंभीर हालत में नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है।

घटना के बाद मृतकों के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। मां-बाप अपनी बच्चियों को याद कर बेसुध नजर आए, वहीं ग्रामीणों में गुस्सा और बेबसी दोनों साफ दिखाई दी। लोगों का कहना है कि यह हादसा कोई पहली घटना नहीं है। इलाके में कई जगह अवैध और असुरक्षित तरीके से मिट्टी और खनिज निकाले जाते हैं, जिन पर समय रहते कार्रवाई नहीं होती। गरीब और ग्रामीण परिवार रोजमर्रा की जरूरतों के लिए जान जोखिम में डालकर ऐसे खतरनाक स्थानों पर जाने को मजबूर हैं।

पुलिस ने शवों का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी गई है। प्रशासन की ओर से कहा गया है कि हादसे के कारणों की विस्तृत जांच की जाएगी और दोषियों पर कार्रवाई होगी। वहीं ग्रामीणों ने मांग की है कि क्षेत्र में मौजूद सभी असुरक्षित और अवैध खदानों को तत्काल बंद किया जाए और पीड़ित परिवारों को उचित मुआवजा दिया जाए, ताकि भविष्य में किसी और घर का चिराग इस तरह बुझने न पाए।

सिंगरौली का यह हादसा एक बार फिर यह सवाल खड़ा करता है कि आखिर कब तक गरीबों की मजबूरी और प्रशासन की लापरवाही जानलेवा साबित होती रहेगी। मिट्टी के ढहते पहाड़ों के साथ सिर्फ जमीन ही नहीं, बल्कि लोगों के सपने और परिवार भी दबते चले जा रहे हैं।

जिम की आड़ में साजिश, ब्लैकमेल और धर्मांतरण का जाल: सरगना इमरान खान 14 दिन की न्यायिक हिरासत में

(जीएनएस)। मिर्जापुर। मिर्जापुर में जिम के नाम पर चल रहे कथित धर्मांतरण और ब्लैकमेल रैकेट के मामले में बड़ा घटनाक्रम सामने आया है। इस गिरोह के मुख्य सरगना बताए जा रहे इमरान खान को दिल्ली से गिरफ्तार कर मिर्जापुर लाया गया, जहां उसे मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में पेश किया गया। अदालत ने पुलिस रिमांड की मांग को खारिज करते हुए आरोपी को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। इस कार्रवाई के साथ ही जिले में काफी समय से चर्चा में रहे इस मामले ने एक गंभीर और संगठित साजिश की तस्वीर पेश कर दी है। पुलिस के अनुसार, इमरान खान जिम की आड़ में एक संगठित नेटवर्क चला रहा था, जिसमें युवतियों को जिम ट्रेनिंग के बहाने फंसाया जाता था। आरोप है कि वहां उनसे आपत्तिजनक वीडियो बनाए जाते थे और बाद में उन्हें ब्लैकमेल कर मानसिक दबाव डाला जाता था। इसी दबाव के जरिए धर्मांतरण कराने की कोशिश की जाती थी। मामले की परतें तब खुलनी शुरू हुईं, जब दो अलग-अलग युवतियों ने थानों में शिकायत दर्ज कराई। शुरुआती जांच में ही पुलिस को संकेत मिल गया था कि यह कोई एकल घटना नहीं, बल्कि सुनियोजित गिरोह का काम है।

जांच आगे बढ़ने पर पुलिस ने मिर्जापुर में संचालित चार जिम सेंटरों को सील किया। बताया गया कि ये सभी जिम इमरान खान के परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों के नाम पर चल रहे थे। पुलिस ने इस मामले में अब तक सात आरोपियों को गिरफ्तार किया है। सभी आरोपियों के बैंक खाते सीज कर दिए गए हैं और कई लग्जरी गाड़ियां भी जब्त की गई हैं, जो इस नेटवर्क के आर्थिक आधार की ओर इशारा करती हैं।

सूत्रों के मुताबिक, इमरान खान अधिकांश समय विदेश में रहता था। वह दुबई और मलेशिया में लंबे समय तक ठहरता था और भारत में अपने नेटवर्क को रिश्तेदारों के जरिए संचालित करता था। पुलिस को आशंका थी कि वह देश छोड़कर फरार हो सकता है, इसी कारण उसके खिलाफ लुक आउट नोटिस जारी किया गया था। इसी नोटिस के आधार पर उसे दिल्ली एयरपोर्ट से पकड़ा गया, जब वह बाहर जाने की तैयारी में था।

पूछताछ में यह भी सामने आया है कि इमरान खान के पास काफी संपत्ति है और वह कई शहरों में जमीन और प्रॉपर्टी से जुड़े मामलों में भी सक्रिय रहा है। आरोप है कि वह जिले में जमीन की प्लाटिंग का काम उद्योगपतियों और कुछ राजनीतिक संपर्कों के पैसों से करता था। जिम सेंटरों के लिए फंडिंग भी वही करता था, जबकि संचालन उसके भाई और अन्य रिश्तेदार संभालते थे। पुलिस को शक है कि जिम केवल एक मुखौटा था, जिसके पीछे कहीं बड़ा नेटवर्क काम कर रहा था।

मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट राहुल कुमार सिंह की अदालत में पेशी के दौरान पुलिस ने आरोपी की कस्टडी रिमांड की मांग की, लेकिन अदालत ने इसे स्वीकार नहीं किया। इसके बाद आरोपी को सीधे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। हालांकि, पुलिस का कहना है कि न्यायिक हिरासत के दौरान भी उससे पूछताछ की जाएगी और पूरे नेटवर्क की कड़ियां जोड़ी जाएंगी।

इस मामले ने मिर्जापुर में सनसनी फैला दी है। स्थानीय लोगों में आक्रोश है और वे सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। प्रशासन का कहना है कि धर्मांतरण और ब्लैकमेल जैसे गंभीर आरोपों से जुड़े इस मामले में किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा। पुलिस पूरे गिरोह की जड़ तक पहुंचने के लिए वित्तीय लेनदेन, कॉल डिटेल्स और विदेश संपर्कों की भी जांच कर रही है। यह प्रकरण न सिर्फ कानून-व्यवस्था का सवाल बन गया है, बल्कि समाज में विश्वास और सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं को भी सामने ला रहा है।

एसएमई आईपीओ से गुलजार होगा शेयर बाजार, गणतंत्र दिवस के बाद निवेशकों के लिए खुलेगा अवसरों का नया दौर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस के अवकाश के बाद शुरू होने वाला कारोबारी सप्ताह शेयर बाजार के प्राइमरी सेगमेंट में खासा हलचल भरा रहने वाला है। जहां एक ओर मेनबोर्ड सेगमेंट में इस सप्ताह कोई नया आरंभिक सार्वजनिक निर्गम नहीं आ रहा है, वहीं दूसरी ओर एसएमई सेगमेंट में निवेशकों के लिए अवसरों की झड़ी लगने जा रही है। 27 जनवरी से शुरू होकर सप्ताह के अंत तक कुल पांच नई कंपनियां अपने एसएमई आईपीओ के जरिए बाजार में उतरने की तैयारी कर चुकी हैं। इसके साथ ही पिछले सप्ताह खुले दो आईपीओ में भी निवेशकों को अंतिम मौका मिलेगा, जबकि पांच कंपनियों के शेयर इसी सप्ताह स्टॉक एक्सचेंज पर सूचीबद्ध होकर कारोबार की शुरुआत करेंगे। ऐसे में यह सप्ताह छोटे और मझोले निवेशकों के लिए खासा अहम माना जा रहा है।

बाजार विशेषज्ञों के मुताबिक, हाल के महीनों में एसएमई आईपीओ को निवेशकों से जिस तरह की सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है, उसने कंपनियों का भरोसा बढ़ाया है। छोटे और मध्यम उद्यम पूंजी जुटाने के लिए तेजी से शेयर बाजार का रुख कर रहे हैं। इसी कड़ी में सबसे पहले 27 जनवरी को कस्तूरी मेटल कंपोजिट अपना आईपीओ लेकर आ रही है।

करीब 17.61 करोड़ रुपये के इस इश्यू में निवेशक 29 जनवरी तक बोली लगा सकेंगे। कंपनी मेटल कंपोजिट और संबंधित उत्पादों के कारोबार से जुड़ी है और आईपीओ से जुटाई गई राशि का उपयोग विस्तार योजनाओं और कार्यशील पूंजी की जरूरतों को पूरा करने में करने की योजना है।

इसके बाद 28 जनवरी को एक साथ तीन कंपनियां अपने आईपीओ खोलने जा रही हैं। इनमें कनिष्क एल्यूमिनियम इंडिया, एमसेफ इक्विपमेंट्स और एक्रेशन न्यूट्रावेदा शामिल हैं। ये तीनों कंपनियां अलग-अलग क्षेत्रों में काम कर रही हैं, जिससे निवेशकों को विविध विकल्प मिलेंगे। कनिष्क एल्यूमिनियम इंडिया एल्यूमिनियम उत्पादों के निर्माण और आपूर्ति से जुड़ी है, जबकि एमसेफ इक्विपमेंट्स औद्योगिक उपकरणों के क्षेत्र में सक्रिय है। वहीं, एक्रेशन न्यूट्रावेदा न्यूट्रास्युटिकल और हेल्थ सप्लीमेंट्स से जुड़े कारोबार में अपनी पहचान बना रही है। विश्लेषकों का मानना है कि इन क्षेत्रों में मांग लगातार बनी हुई है, जिससे लंबी अवधि में निवेशकों को फायदा मिल सकता है।

सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन 30 जनवरी को सीकेके रिटेल मार्ट का आईपीओ खुलेगा। यह कंपनी रिटेल सेक्टर में काम कर रही है और तेजी से विस्तार की योजना पर आगे बढ़ रही है। रिटेल सेक्टर को लेकर निवेशकों की दिलचस्पी पहले से ही बनी रहती है, ऐसे में इस इश्यू पर भी अच्छी प्रतिक्रिया की उम्मीद जताई जा रही है। इन पांच नए एसएमई आईपीओ के अलावा, पिछले सप्ताह खुले हन्ना जोसेफ हॉस्पिटल और शायोना इंजीनियरिंग के आईपीओ में भी निवेशकों को 27 जनवरी तक बोली लगाने का मौका मिलेगा। दोनों ही इश्यू को अब तक बाजार से संतोषजनक समर्थन मिला है, जिससे यह संकेत मिलता है कि निवेशक एसएमई सेगमेंट को लेकर आशावादी हैं।

लिस्टिंग के मोर्चे पर भी यह सप्ताह खासा व्यस्त रहने वाला है। 28 जनवरी को शैडोफैक्स टेक्नोलॉजीज के शेयर मेनबोर्ड पर सूचीबद्ध हो सकते हैं, जिस पर बाजार की खास नजर रहेगी। इसके अलावा डिजीलॉजिक सिस्टम्स एसएमई प्लेटफॉर्म पर कारोबार की शुरुआत करेगी। आने वाले दिनों में केआरएम आयुर्वेद, शायोना इंजीनियरिंग और हन्ना जोसेफ हॉस्पिटल के शेयर भी विभिन्न एसएमई प्लेटफॉर्म पर सूचीबद्ध होंगे। इन लिस्टिंग्स से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि एसएमई सेगमेंट में गतिविधियां लगातार तेज हो रही हैं और निवेशकों की भागीदारी भी बढ़ रही है।

बाजार जानकारों का कहना है कि एसएमई आईपीओ में निवेश करते समय निवेशकों को अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। हालांकि यहां रिटर्न की संभावनाएं आकर्षक हो सकती हैं, लेकिन जोखिम भी अपेक्षाकृत ज्यादा होता है। कंपनी के बिजनेस मॉडल, वित्तीय स्थिति और भविष्य की योजनाओं को समझकर ही निवेश का फैसला करना चाहिए। इसके बावजूद यह सच है कि हाल के वर्षों में कई एसएमई कंपनियों ने लिस्टिंग के बाद अच्छा प्रदर्शन कर निवेशकों को बेहतर मुनाफा दिया है, जिससे इस सेगमेंट के प्रति विश्वास बढ़ा है।

कुल मिलाकर, गणतंत्र दिवस के बाद आने वाला कारोबारी सप्ताह प्राइमरी मार्केट के लिहाज से खासा अहम रहने वाला है। एसएमई आईपीओ की भरमार, खुले इश्यू में निवेश का अंतिम मौका और नई लिस्टिंग्स—ये सभी मिलकर बाजार में उत्साह का माहौल बनाएंगे। ऐसे समय में निवेशकों की नजरें न सिर्फ नए इश्यू पर होंगी, बल्कि लिस्टिंग के दिन होने वाली हलचल पर भी टिकी रहेंगी। यह सप्ताह एक बार फिर साबित करेगा कि एसएमई सेगमेंट भारतीय शेयर बाजार में तेजी से उभरता हुआ और संभावनाओं से भरा क्षेत्र बन चुका है।

मतदाता सूची की सघन जांच में बड़ा खुलासा, मुरादाबाद में लाखों नामों की दोबारा पड़ताल से चुनावी व्यवस्था में हलचल

(जीएनएस)। मुरादाबाद। आगामी त्रिस्तरीय पंचायत चुनावों से पहले मतदाता सूची को पूरी तरह शुद्ध और पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से मुरादाबाद जिले में बड़े पैमाने पर चल रहा सत्यापन अभियान अब निर्णायक दौर में पहुंच गया है। केंद्रीय चुनाव आयोग के निर्देश पर जिले में संभावित डुप्लीकेट मतदाताओं की पहचान और नामों की जांच का कार्य तेज कर दिया गया है। आयोग की ओर से भेजी गई रिपोर्ट में मुरादाबाद जिले में 4.65 लाख संभावित डुप्लीकेट मतदाता चिन्हित किए गए हैं, जिसके बाद प्रशासनिक अमला अलर्ट मोड में आ गया है और बूथ स्तर तक घर-घर जाकर जांच कराई जा रही है।

चुनाव आयोग द्वारा आधुनिक तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से की गई प्रारंभिक जांच में पहले चरण में ही 2.35 लाख संदिग्ध डुप्लीकेट मतदाताओं की सूची सामने आई थी। इसके आधार पर जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रों, तहसीलों और ग्राम पंचायतों में बूथ लेवल अधिकारियों को सक्रिय किया गया। बीएलओ को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि वे प्रत्येक नाम का भौतिक सत्यापन करें, मतदाता के निवास स्थान, पहचान और अन्य विवरणों का मिलान करें, ताकि किसी भी तरह की गड़बड़ी अंतिम सूची में न रहे।

जांच के दौरान यह तथ्य सामने आया कि कई ग्राम पंचायतों और शहरी वार्डों में एक जैसे नाम वाले एक से अधिक मतदाता दर्ज हैं। कई मामलों में नाम और उम्र समान पाई गई, जबकि पिता या पति का नाम अलग-अलग दर्ज था। इसके अलावा बड़ी संख्या में ऐसे भी मतदाता मिले, जिनके नाम एक से अधिक मतदान केंद्रों या अलग-अलग क्षेत्रों की मतदाता सूचियों में दर्ज थे। इसी तरह कुछ मतदाता ऐसे भी पाए गए, जो लंबे समय से जिले में निवास नहीं कर रहे थे या जिनका निधन हो चुका था, लेकिन उनके नाम अब तक सूची में बने हुए थे।

सघन जांच और सत्यापन के बाद अब तक लगभग 71 हजार डुप्लीकेट नाम मतदाता सूची से हटाए जा चुके हैं। प्रशासन का कहना है कि यह प्रक्रिया अभी जारी है और अंतिम आंकड़ा इससे अधिक भी हो सकता है। इसके साथ ही सामान्य मतदाताओं के सत्यापन का कार्य भी समानांतर रूप से किया गया, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी संख्या में नामों की पड़ताल हुई। जांच के दौरान करीब 2.11 लाख नाम ऐसे पाए गए, जिन्हें विभिन्न कारणों से सूची से हटाया गया, जबकि 2.28 लाख नए मतदाताओं को मतदाता सूची में जोड़ा गया। इस पूरी प्रक्रिया के बाद वर्ष 2021 की तुलना में जिले में कुल मतदाताओं की संख्या में लगभग 18 हजार की शुद्ध वृद्धि दर्ज की गई है।

अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी संगीता गौतम के अनुसार, चुनाव आयोग का स्पष्ट निर्देश है कि मतदाता सूची पूरी तरह त्रुटिरहित होनी चाहिए, ताकि पंचायत चुनाव निष्पक्ष और पारदर्शी ढंग से कराए जा सकें। इसी उद्देश्य से दावे और आपत्तियों के निस्तारण के लिए 20 फरवरी की अंतिम तिथि निर्धारित की गई है। इस अवधि के दौरान कोई भी नागरिक यदि अपने नाम, पते, उम्र या अन्य विवरणों में त्रुटि पाता है, या यह महसूस करता है कि उसका नाम गलत तरीके से सूची से हटा दिया गया है, तो वह निर्धारित प्रारूप में दावा या आपत्ति दर्ज करा सकता है।

हालांकि इस व्यापक सत्यापन अभियान के बीच कुछ शिकायतें भी सामने आई हैं, जिसने प्रशासन की चिंता बढ़ा दी है। कई क्षेत्रों से यह आरोप लगे हैं कि बड़ी संख्या में शादीशुदा महिलाओं के नाम मतदाता सूची से कट गए हैं। बताया जा रहा है कि विवाह के बाद निवास स्थान बदलने या दस्तावेजों में पते के अंतर के कारण उनके नाम स्वतः डुप्लीकेट या संदिग्ध श्रेणी में आ गए। इसके अलावा कुछ मामलों में आधार संख्या अधूरी या अपडेट न होने के कारण भी नाम हटाए जाने की शिकायतें मिली हैं। सदर, बिलारी, कांठ और ठाकुरद्वारा तहसीलों से इस प्रकार की आपत्तियां अपेक्षाकृत अधिक संख्या में सामने आई हैं।

रेलवे पटरियों पर नशे की साजिश बेनकाब, सूरत स्टेशन से अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स नेटवर्क पर डीआरआई का बड़ा वार

(जीएनएस)। सूरत। देश में नशे के खिलाफ चल रही मुहिम के बीच राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) की टीम ने एक बार फिर बड़ी कामयाबी हासिल की है। गुजरात के सूरत रेलवे स्टेशन पर की गई सटीक और गोपनीय कार्रवाई में डीआरआई ने अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स तस्करी के एक अहम प्रयास को नाकाम कर दिया। मुंबई सेंट्रल से अमृतसर जा रही गोल्डन टेम्पल एक्सप्रेस के फर्स्ट क्लास कोच से एक नाइजीरियाई महिला को गिरफ्तार किया गया, जिसके पास से 50 ग्राम कोकीन और 903 ग्राम मेथामफेटामाइन बरामद हुई। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इन नशीले पदार्थों की कीमत लगभग 2.30 करोड़ रुपये आंकी जा रही है।

जानकारी के अनुसार डीआरआई को खुफिया इनपुट मिला था कि रेलवे मार्ग के जरिए भारी मात्रा में ड्रग्स की तस्करी की जा रही है और एक विदेशी महिला इसमें अहम भूमिका निभा रही है। इसी इनपुट के आधार पर डीआरआई की टीम ने सूरत रेलवे स्टेशन पर निगरानी बढ़ाई। जैसे ही गोल्डन टेम्पल एक्सप्रेस स्टेशन पर पहुंची, अधिकारियों ने बिना किसी हड़बड़ी के फर्स्ट क्लास कोच को चिन्हित किया और संदिग्ध महिला पर नजर रखी। तलाशी के दौरान महिला के सामान से प्रतिबंधित नशीले पदार्थ बरामद होते ही पूरी साजिश का पर्दाफाश हो गया।

छापेमारी के दौरान महिला ने खुद को निर्दोष बताते हुए जोरदार विरोध किया और कोच में शोर मचाने लगी। स्थिति को संभालने के लिए मौके पर मौजूद सुरक्षा बलों को अतिरिक्त सतर्कता बरतनी पड़ी। प्लेटफॉर्म पर यात्रियों की भीड़ जमा हो गई, लेकिन डीआरआई और रेलवे सुरक्षा बल की टीम ने संयम से काम लेते हुए महिला को ट्रेन से उतारा। महिला को काबू में करने और कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के लिए पांच महिला पुलिसकर्मियों की मदद ली गई, जिसके बाद उसे हिरासत में लिया गया।

गिरफ्तारी के बाद आरोपी महिला को अदालत में पेश किया गया, जहां न्यायालय ने उसे न्यायिक हिरासत में भेजने का आदेश दिया। डीआरआई के अधिकारियों का कहना है कि यह केवल एक गिरफ्तारी नहीं, बल्कि एक बड़े अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स नेटवर्क की कड़ी है। शुरुआती जांच में संकेत मिले हैं कि यह खेप देश के कई बड़े शहरों में सप्लाई की जानी थी, जहां पहले से सक्रिय तस्कर इसे आगे वितरित करने वाले थे। एजेंसियां अब यह पता लगाने में जुटी हैं कि महिला किन-किन लोगों के संपर्क में थी और इस नेटवर्क का संचालन किन देशों से किया जा रहा था।

सूरत और गुजरात के अन्य हिस्सों में बीते कुछ समय से ड्रग्स तस्करी के मामलों में लगातार इजाफा देखा जा रहा है। कुछ समय पहले ही सूरत में पुरी-अहमदाबाद एक्सप्रेस ट्रेन से 12 लाख 26 हजार रुपये मूल्य का लावारिस गांजा बरामद किया गया था। उस मामले में पुलिस ने अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू की थी। रेलवे मार्ग से नशीले पदार्थों की तस्करी की यह प्रवृत्ति सुरक्षा एजेंसियों के लिए बड़ी चुनौती बनती जा रही है, क्योंकि यात्री ट्रेनों के जरिए देश के कोने-कोने तक नेटवर्क फैलाने की कोशिश की जाती है।

इससे पहले अहमदाबाद में भी ड्रग्स तस्करी के एक संगठित गिरोह का खुलासा हुआ था, जहां वेजलपुर पुलिस ने मां और बेटे को गिरफ्तार किया था। जांच में सामने आया कि पूरा परिवार पिछले नौ वर्षों से ड्रग्स के धंधे में शामिल था। पिता की गिरफ्तारी के बाद मां और बेटे ने इस अवैध कारोबार की कमान संभाल ली थी। पुलिस ने महिला आरोपी समीमबानू उर्फ पप्पी पठान और उसके बेटे मोमिनखान पठान को गिरफ्तार कर उनके पास से करीब 7.74 लाख रुपये मूल्य का 250 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद किया था। पूछताछ में यह भी सामने आया था कि यह खेप फतेवाड़ी इलाके के एक तस्कर के जरिए उन्हें दी गई थी।

डीआरआई और राज्य पुलिस के अधिकारियों का मानना है कि हाल के ये मामले आपस में जुड़े भी हो सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स सिंडिकेट भारत को ट्रांजिट और खपत दोनों के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहे हैं। विदेशी नागरिकों की संलिप्तता इस बात की ओर इशारा करती है कि नेटवर्क की जड़ें देश के बाहर तक फैली हुई हैं। इसी वजह से अब केंद्रीय एजेंसियां राज्य पुलिस के साथ समन्वय बनाकर जांच को आगे बढ़ा रही हैं।

कर्तव्य, साहस और सेवा का सम्मान गणतंत्र दिवस पर उत्तर प्रदेश पुलिस के 90 जांबाजों को राष्ट्रीय पदक

(जीएनएस)। लखनऊ। 76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर उत्तर प्रदेश पुलिस के लिए यह दिन गर्व, सम्मान और प्रेरणा का प्रतीक बन गया है। देश की आंतरिक सुरक्षा, कानून-व्यवस्था और जनसेवा के मोर्चे पर असाधारण योगदान देने वाले पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को इस बार राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा रहा है। गृह मंत्रालय द्वारा घोषित सूची के अनुसार उत्तर प्रदेश पुलिस के कुल 90 पुलिसकर्मियों को उनकी वीरता, विशिष्ट सेवाओं और सराहनीय कार्यों के लिए विभिन्न श्रेणियों में पदक प्रदान किए जाएंगे। यह सम्मान न केवल व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि प्रदेश की पुलिस व्यवस्था के लिए भी गौरव का विषय माना जा रहा है।

घोषित सूची के मुताबिक, इस वर्ष प्रदेश के 18 पुलिसकर्मियों को असाधारण साहस, जोखिम भरे अभियानों और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अदम्य हौसले का परिचय देने के लिए गैलेंट्री मेडल से सम्मानित किया जाएगा। ये वही अधिकारी और जवान हैं, जिन्होंने आतंकवाद, संगठित अपराध, नक्सल प्रभावित क्षेत्रों, मुठभेड़ों, भीड़ नियंत्रण और संवेदनशील कानून-व्यवस्था की स्थितियों में अपनी जान की परवाह किए बिना कर्तव्य निभाया। इनकी बहादुरी ने न सिर्फ आम नागरिकों की जान बचाई, बल्कि पुलिस बल के मनोबल को भी नई ऊंचाई दी। वीरता पदक पाने वालों में इंस्पेक्टर संतोष कुमार, इंस्पेक्टर अमित, अपर पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार सिंह, सब-इंस्पेक्टर सौरभ मिश्रा और हेड कांस्टेबल बैजनाथ जैसे नाम प्रमुख हैं। इंस्पेक्टर अमित का नाम विशेष रूप से चर्चा में है, क्योंकि उन्हें इससे पहले भी वीरता पदक से सम्मानित किया जा चुका है। यह तथ्य उनके लगातार साहसिक योगदान और समर्पण को दर्शाता है। इनके अलावा मनोज कुमार सिंह, अतुल चतुर्वेदी, प्रदीप कुमार सिंह, सुशील कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक राकेश, पुलिस उपाधीक्षक धर्मेश कुमार शाही, इंस्पेक्टर सत्य प्रकाश सिंह, सब-इंस्पेक्टर यशवंत सिंह, पुलिस उपाधीक्षक रजनीश कुमार उपाध्याय, सब-इंस्पेक्टर जर्रार हुसैन, सुनील सिंह और कांस्टेबल कुणाल मलिक को भी गैलेंट्री मेडल से नवाजा जाएगा। इनमें से कुछ अधिकारियों और जवानों को यह सम्मान दूसरी बार मिल रहा है, जो उनके निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन का प्रमाण है।

वीरता पुरस्कारों के अलावा विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक (पीएसएम) से भी उत्तर प्रदेश पुलिस के चार अधिकारियों को सम्मानित किया जाएगा। इस श्रेणी में वे अधिकारी शामिल हैं, जिन्होंने लंबे समय तक ईमानदारी, निष्ठा और उच्च पेशेवर मानकों के साथ सेवा दी है। राष्ट्रपति पदक पाने वालों में सब-इंस्पेक्टर तेज सिंह यादव, पीयूष कुमार, हेड कांस्टेबल महेंद्र प्रताप सिंह और पुलिस उपाधीक्षक हरेंद्र सिंह यादव के नाम शामिल हैं। इन अधिकारियों की सेवाएं नीतिगत सुधारों, प्रशासनिक दक्षता, अपराध नियंत्रण और पुलिस व्यवस्था को मजबूत करने के क्षेत्र में उल्लेखनीय रही हैं।

इसके साथ ही सराहनीय सेवा के लिए 68 पुलिसकर्मियों को पुलिस पदक (एमएसएम) प्रदान किए जाने की घोषणा की गई है। यह पदक उन अधिकारियों और कर्मचारियों को दिया जाता है, जिन्होंने अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया हो, चाहे वह अपराध जांच हो, तकनीकी नवाचार, यातायात व्यवस्था, महिला एवं बाल सुरक्षा, साइबर अपराध नियंत्रण या आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्र हों। बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों को यह सम्मान मिलना इस बात का संकेत है कि प्रदेश में पुलिसिंग के स्तर को बेहतर बनाने के लिए व्यापक और सामूहिक प्रयास किए जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश पुलिस के लिए यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है, क्योंकि प्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य है और यहां कानून-व्यवस्था की चुनौतियां भी उसी अनुपात में बड़ी और जटिल हैं। ऐसे में सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों के बावजूद पुलिस बल द्वारा किए जा रहे कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलना पूरे तंत्र के लिए उत्साहवर्धक है। वरिष्ठ अधिकारियों का कहना है कि यह सम्मान उन हजारों पुलिसकर्मियों का प्रतिनिधित्व करता है, जो दिन-रात ड्यूटी पर तैनात रहकर आम जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं, भले ही उनके नाम सुर्खियों में न आएं।

इस वर्ष की सम्मान सूची में उत्तर प्रदेश पुलिस के दो वरिष्ठ अधिकारियों, आईजी आकाश कुलहरी और आईजी अमित पाठक को भी केंद्रीय स्तर पर उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किए जाने की घोषणा की गई है।